

प्रकाशक—

अखौरी सविदानन्दसिंह

अध्यक्ष, सरस्वती-भण्डार

वांकीपुर, पटना ।

मुद्रक—

हरजप्रसाद खन्ना

हिन्दी-साहित्य प्रेस

जानसेनगंज, प्रयाग ।

किया है, जो उचित भी है। पद्य-साहित्य की आजकल हमें कतनी आवश्यकता भी नहीं है, जितनी कि गद्य की। अस्तु।

कुछ ही दिन हुए, 'हिन्दी-गद्य-रत्नावली' के नाम से मैंने हिंदी के दस-पांच धुरंधर लेखकों के सरस लेखों का एक छोटा संप्रह संकलित किया था। संप्रह कैसा है, इसे कहने का मुझे अधिकार नहीं। आज इस संप्रह के प्रकारक महोदय की अनुमति से एक दूसरा 'संप्रह' उपस्थित करता हूँ। यह संप्रह पद्य का है, अतः इसका नाम मैंने 'हिन्दी-गद्य-रत्नावली' रखा है। यह भी वसी 'स्टैंडर्ड' के लिये संप्रहीत किया गया है, जिसके लिए कि 'गद्य-रत्नावली' का सकलन हुआ है। जिन कवियों का सरस कवितार्ण इस पुस्तक में संकलित की गई है, उनके संबंध में दो-दो चार-चार शब्द नीचे लिखे जाते हैं। इसके पहले यह कह देना उचित होगा कि इस पुस्तक में केवल ऐसी कविताओं का स्थान दिया गया है, जिनमें भगवद्भक्ति, विद्युद्ध प्रेम, वीर भाव, प्रकृति-सौन्दर्य और नानि नैपुण्य का चित्राकण देखने में आया है। शृंगार रसमय पद्य, चित्राकषक चमत्कारपण और सरस होने हुए भी विन्यायिका को नष्ट में, इस संप्रह में संकलित नहीं किये गये हैं।

सबसे पहले चदधरदायी आते हैं। यह जातीय कवि थे। हिन्दू-जातिके अर्थात् चिन्तो को इन्होंने अकित किया है। हिन्दुओं का उत्थान और पतन देखना ही तो चद का 'रामो' पद डालित। इनमें महाकवि के सभी लक्षण मिलते हैं। द्विज भाषा में होने हुए भी इनका वृहत् ग्रन्थ हिन्दी की अमूल्य संपत्ति है। इसे बसपर अभिमान है। इनके बाद महात्मा कबीरदास को स्थान दिया गया है। इस सन शिरोमणि के विषय में कहा ही क्या जा सकता है? कबीर ने 'उधर' को जान कहा है, 'इधर' को नहीं।

है। रचना में काफ़ी मिठास और खोज है। अब महाकवि केशवदाम को लॉजिए। भाषा-साहित्य में सूर, तुलसी और कबीर के बाद इन्हीं का स्थान है। यह काव्याचार्य थे। इनकी कविता क्लिष्ट और दुस्तुह अवश्य है, पर सरसता और चमत्कार से खाली नहीं। हिंदी भाषा के यह 'माव' हैं। इनके अनन्तर भक्तवर रसदानि और तत्परचान् महाकवि सेनापति की कवि रचना की धानगी मिलेगी। पहले का रचना विशुद्ध प्रेमकी स्वच्छ आरमी और दूसरे की कविता कवि-कला-कथित आभूषणों की मंजूपा है। इसके बाद सतवर सुन्दरदास जी को 'बानी' दृष्टिगत होगी। उनके पद्यों में सरसता के अनिरिक्त बहुत कुछ पते की भी धान हैं। शृंगार-स्वरूप विहारों को भी हमने स्थान दिया है, पर ध्वरायें नहीं, उनकी भक्ति और नीति-सवर्धा मूर्तियाँ ही संग्रहों की गई हैं। हम कवि-पक्ति में इन्हें केशव के बाद प्रतिष्ठित करेंगे। विहारी का भी, भाषा-साहित्य में, एक विशेष स्थान है, इसमें सन्देह नहीं। तत्परचान् त्रिपार्थी-बधु—भूषण और मतिराम—और फिर लाल का नवर आता है। भूषण हिंदीभाषा में खोर रस के एक मात्र कवि हुए हैं, इनके मय में इतना ही कहना पर्याप्त होगा। मतिराम का भाषा-सौष्ठव अवश्य वर्णन ही की चहानी और सरसता अनूठी है। लाल वंदनापद के खोर-कवि थे। वाग-साहित्य में भूषण की कविता के बाद इन्हीं की रचना को स्थान मिलना चाहिए। अब महाकवि देव को लॉजिए। यह भी एक बंध काव्याचार्य थे। इनकी कविता सुधारम में डूबी हुई है। प्रत्येक मूर्ति अमूल्य है। माधुये प्रमाद और खान खानोंकी गुणों को इन्होंने अपनी कविता में मृदु निभाया है। साहित्य-जगत् का इस महाकवि पर अभिमान करना चाहिए। इनके बाद सुन्द हैं। इनकी मूर्तियाँ नीति-सवर्धिनी हैं, जितने गणत में मागर भरने का प्रयत्न किया गया।

याजी सुखं ह्य गय पञ्चान, दैरि सुमजि दिस्सद् दिसान ॥३०॥
 सुग्द लेहु लेहु मुख जंषि जोध, सप्ताद् सूर सय पहरि क्रोध ॥३१॥
 पहुँचे सु जाय तत्ते सुरंग, मुष् मिरन भूप जुदि जोध जग ॥३२॥
 बलदी सुराज पृथिराज थाग, थकि सूर गगन, धर धमत नाग ३३
 कम्मान धान छुट्टिदि अपार, लागत सोह इमि सारि धार ॥३४॥
 धमसान धान सब धीर म्येत, धन क्षोन वदत अरु रुकत रेत ॥३५॥
 मारे वरात० के जोध जोट, परि रुंड मुड अरि म्येत सोह ॥३६॥

इए

परे रहत गिन-म्येत अरि करि विद्विय मुग्द रूप ।
 जीनि चन्व्यां पृथिगत गिन, मरुळ सर भय मुग्द ॥३७॥
 पद्मावति इमि नै चन्व्यां हर्षि गत पृथिगत ।
 प्ले परि पतमाह० का भई ज्ञु आनि भवान ॥३८॥

गीत

भई ज्ञु आनि भवान आय गान्धरीन मुग्द ।
 आज गरी पविशत वी । बु न मनन मुग्द ॥
 काय जोय गीत अतन करिय पती अतन करिय ।
 धान नाड ह ३ । । मुग्द नरु मर म ३३ ॥
 पथे पशत न- मार के, मरि न । न न न न मथत
 आय हकारि । द्वा कर्त न मा मुग्द न ३० ॥३९॥

इस पद्य में 'नै चन्व्यां' का अर्थ 'नै चन्व्यां' है। 'पृथिगत' का अर्थ 'पृथिवी' है। 'पद्मावति' का अर्थ 'पद्मावती' है। 'प्ले परि पतमाह०' का अर्थ 'प्ले परि पतमाह०' है। 'का भई ज्ञु आनि भवान' का अर्थ 'का भई ज्ञु आनि भवान' है। 'आय गान्धरीन मुग्द' का अर्थ 'आय गान्धरीन मुग्द' है। 'आज गरी पविशत वी' का अर्थ 'आज गरी पविशत वी' है। 'बु न मनन मुग्द' का अर्थ 'बु न मनन मुग्द' है। 'काय जोय गीत अतन करिय पती अतन करिय' का अर्थ 'काय जोय गीत अतन करिय पती अतन करिय' है। 'धान नाड ह ३ । । मुग्द नरु मर म ३३ ॥' का अर्थ 'धान नाड ह ३ । । मुग्द नरु मर म ३३ ॥' है। 'पथे पशत न- मार के, मरि न । न न न न मथत' का अर्थ 'पथे पशत न- मार के, मरि न । न न न न मथत' है। 'आय हकारि । द्वा कर्त न मा मुग्द न ३० ॥३९॥' का अर्थ 'आय हकारि । द्वा कर्त न मा मुग्द न ३० ॥३९॥' है।

मन के मारे धन गये, धन तजि पसी माहि ।
 कह कबीर क्या की जण, यह मन ठहरै नहि ॥७०॥
 कशिरा सोया क्या करे, जागन की कर चौप ।
 ए दम हीरा हल हैं गिनि-गिति हरि को सौप ॥७१॥
 मांस अहारी मानवा परतछ राइस अग ।
 ताकी सगति मत करौ, परत रग में भग ॥७२॥
 हिन्दू के दाया नहीं, मिहर तुलक के नाहि ।
 कह कबीर दो ों गये, लस' चौ-ामी माहि ॥७३॥
 कबीर मतवाला नाम का, मः मतवाला नाहि ।
 नाम-पियाला जो दिखै सो मतवाला नाहि ॥७४॥
 म्हास मगल राइ के ठडा पानो पीव ।
 देगि विगानी चून्नी, मर नदवार जीव ॥७५॥
 मभिरत है कृप-उर भाषा बरग नीर ।
 भाषा मतगुरु मति है मत मन गणै मभोर ॥७६॥
 पंथ, पट पटि जग मुखा, पडिन दुखा न रोय ।
 डाई अन्तर पैम का पौ सो पटिन रोय ॥७७॥
 एकै सावे सब मरै सब सावे सब चार ।
 नो गनि सेवे मरु को, फनं फलै अघार ॥७८॥
 मपने मे माड मिले, मोरने लखा नगार ।
 आख न रोग डरपना, मति मुपना है जाय ॥७९॥
 साक पडे दिन बीतवै, चकवा' रोन्हा रोय ।
 चल चकवा' था देसका' जग गैत ना होय ॥८०॥

सब निर्दग्ध धरमरत पुनी । नरशरु नारि चतुरसय गुनी ॥
सब गुनग्य र्दित मय म्यानी : सय कृतप नर्हि कपट म्यानी ॥

शेष

राम राज नभगेस' सुनु, सचराचर जग माहिं ।

काल-करम-सुभाव-गुन-कृत दुख काहुहि नाहिं ॥ ३ ॥

चौकाइ

भूमि सब सागर सुमेखथा । एक भूप रघुपति कोसला ॥
भुवन अनेक रोम प्रति जासू यह प्रभुता कहु बहुत न तासू ॥
सो महिमा समुझत प्रभु केरी यह बरनत हीनता घनेरी ॥
सो महिमा गगेस जिन्ह जानी । फिरयेहि चरितनिन्हहु रतिमानी ॥
मोड जाने कर फल यह लीजा । कइहि महाभुनिवर दममोला ॥
राम राज कर सुग्य मरदा । बरनि नमरइ फनीम मारदा ॥
सब उदार मय पर उपकरो विप्र-चरन-सेवक नर नारी ॥
गुन-नारि-अन-रत मय भारी । तेमन-वच-जम पति-हित-कारी ॥

शेष

दह जातन्ह कर भेद जग, नरनरु नृत्य-समाज ।

जिनहु मरहि अम सृनिय जग रामचंद्र के राज ॥ ५ ॥

चौकाइ

फूलहि फलहि मश नर कानन । रहहि एकमेग तन पचानन ॥
मग मग मरत वैरु विमराइ । मवन्नि परमपर प्रीति बडाई ॥
कूजहि मग मग जाना उन्दा । अभव चरहि वन करहि अनदा ॥
मीनर पवन मरनि वह मदा । गुजन अदि नेउ चलि मकरंदा ॥

१ गच्छ; काक पुंगुदि, गरइ म, गाय चरित इह रइ ई ।

राम करहिं भ्रातन्ह पर प्रीनी । नाना भांति मिखावहिं नीती ॥
 हरपित रहहिं नगर के लोगा । करहिं सकल सुरदुरलभ भोगा ॥
 अहनिमि विधिहिं सनावन रहहीं । शोरधुशोर-चरन-रति चहहीं ॥
 दुइ मुन मुन्डर सीना जायै । लव कुम वेद पुराननि गये ॥
 दोउ विजयां विनयो गुनमरि । हरि-प्रतिधिम्ब मनहुं अतिमुर ॥
 दुइ-दुइ मुत सब भ्रातन्ह करे । भये रूप गुनसौंउ पनेरे ॥

शेष

ज्ञान-गिरागोलीत अत्र, माया-मन-गुन-पार ।

मोइ मशिदानपन कर नर-चरित उदार ॥ ७ ॥

चोपाई

धानकाल सरजू करि मज्जन । बैठहि सभा मह द्विज मज्जन ॥
 वद पुरान यामउ कथानां । मुनार्हि राम जदपिसब जानहिं ॥
 अनृजहि मज्जुन भोजन करहीं । देख सकल जननी मुन्य भरहीं ॥
 मरन मयुजन ननव भाइ । सहिन पवनमुन उषवन जाई ॥
 रूमरि बैठ राम गु-गा । कह हनुम त मुमनि-अवगाइ ॥
 मुन विमदगुन अनिम उ रावटे । वदु र-रुकिरिवि यकडावहिं ॥
 सब के गुण गुण जाई पुराना । रामचरित पावन विधि नन्द ॥
 नर अरु नारि राम गुन गानहि । करहि द्दम निसिजातनजानहि ॥

२२५

अब रघुवी शर्मि-र कर मुन्य-मपदा-ममाज ।

मइम मप नाई करि मरुति चहैं नृप राम विराज ॥८॥

२२६

नारदादि मनदादि मुनया । इरसन लागि वेमलाधीसा ॥
 दिन शन सकल अजाया आरति । देखि नगर विराग विमरावहि ॥

बैठे बजाज सराफ यनिष्ठ अनेक मनहुँ कुबेर ते ।
सय सुखी सय सबरित सुन्दर नारिनर सिमु जरठ जे ॥१३॥

शेषः

उत्तर दिसि सरजू बह, निर्मल जल गंभीर ।
बोधे पाट मनोहर, स्वल्प पंक नहि तीर ॥१४॥

चौपाई

दूरि फराक रुचिर सो पाटा । जहँ जलपिबिहियाजि गज-छाटा ॥
पनिषट परम मनोहर, नाता । तहां न पुरुष करहि असनाता ॥
राजघाट सब विधि सुन्दर घर । मज्जहि तहां धरन चारिउ नर ॥
तीर-तीर देवन्ह के मंदिर । चहुँदिसि जिन्हके उपवन सुन्दर ॥
कहुँ-कहुँ सरिता-तीर उदासी बसहि ग्यानरत मुनि संन्यासी ॥
तीर-तीर तुलसिका सुहाई । वृन्द-वृन्द बहु मुनिन्ह लगाई ॥
पुर-सोमा कहु धरनि न जाई । बाहिर नगर परम रुचिराई ॥
देवत पुरी अखिल अघ भागा । वन उपवन बापिका तदागा ॥१५॥

पन्द

वापी तड़ाग अनूप कूप मनोहरायत मोहहीं ।
सोपान सुन्दर नीर निर्मल देखि सुर मुनि मोहहीं ॥
बहु रंग कज अनेक रंग कूजहि मधुप गुजारहीं ।
आराम रम्य पिकादि रंग-रब जनु पथिक हंकारहीं ॥१६॥

शेषः

रमानाथ जहँ राजा मो पुर धरनि कि जाइ ।
अनिमादिक सुख मंपदा, रही अवध सब छाइ ॥१७॥

(राम-चरित-मानस)

संस्कृत-विद्यालय

संस्कृत-विद्यालय

१

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

२

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

३

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

कहाँ तात, मान, भ्रान, भगिनी, भामिनी, भाभी,
छाटे छोटे छोहरा अभागे मारे भागिरे ॥
हाथी छोरो, घोरा छोरो, महिष वृषभ छोरा,
छेरी छोरो, सोबै सोजगाधो जागि जागि रे ॥”
तुलसी विर्योकि अकृतानी जातुधनां कहै,
“बार बार बहौ, भिय कपि साँन लागि रे ॥३॥

२९

बड़े विकराल बेष देखि, मुनि सिंह-जाट,
उठयो मेरनाद सविशर फहै रावनो ।
बेग जीत्यो मारत प्रताप मारतइ काटि,
कालकू कराटना बड़ाई जीतो बावनो ॥
तुलसी सपाने जातुधन पक्षिमान मन,
“जाका एमा दून मा मारिअ अबै आवनो ।”
काहे को कुसठ राधे राम बानधर न क,
बिषम बगमा अति दर वे बनावनो ॥४॥

३०

पाना पानी पाना मर रानी अकृतानी कहै
जति तै परा । गति जानि गन बालि है ।
बमन विमार, मरि मयन मम, जत न
आतन गुमान कहै क्या न काउ पायिहै ?”
तुलसी बंद वै मीनि ताव सुनि जाय कहै
“का न जान के जान में कटयो केना कडि है ।”
बापुगे विभीषन पुकारि बार बार कह्यो,
“बानर बड़ा बटाइ पने पर पालिहै” ॥५॥

३१

तुलसी जो वै राम सौ, नाहिन सहज सनेह ।
 मूँड़ मुड़ायो वादि ही, भाँड़ भयो तजि गेह ॥१६०॥
 होत भले के अनभले, होइ दानि के सूँ ।
 होइ कुपूत सुपूत के, ज्यों पावक में धून ॥१७३॥
 वरपि बिस्व हरपित करत, हरत ताप, अघ, प्यास ।
 तुलसी दोष न जलज को, जो जल जरै जवाम ॥१८०॥
 सागदूध को स्वांग करि, वृक्ष की फरनूति ।
 तुलसी ताप चाहिण, कीरनि, विजय, विभूति ॥१९०॥
 लोह-रोनि—कृती मडै, अज्ञी सदै न कोइ ।
 तुलसी जो अज्ञी नई माँ अज्ञी न होइ ॥२००॥
 मनमगन कह जे नजनि, निज अनजिन अनुमानि ।
 न नर पावन पापन्य निरुद्ध विनेकन जानि ॥२०४॥
 तुलसी भेटे न मोह नम किंचे कोष्टे गुन-आम
 रदद अमर जौ नरु दिन राज-दुख-राज राम ॥२०८॥
 नष्ट जगो माइ गुन' कस मोह रावा रागे
 नरु' जगे अक भट गग-दु' व की जानि ॥२११॥
 तुलसी कउल क समन जगो कोरिण' सैन
 कउ न कउ' जे'रु' नै पलिहे कौन ॥२३३॥
 तुलसी क क कल हा अकसन पाप-बहार ।
 नै'र' जवर क'व'न नई देन म नार किधार ॥२५॥

(गणकरी)

दीन्हेसि जग देखन कहँ नैना । दीन्हेसि भवन सुनै कहँ बैना ॥
 दीन्हेसि कंठ थोल जेहि माहां । दीन्हेसि कर-पद्म बर धाहां ॥
 दीन्हेसि चरन अनूप चलाहीं । सो पै मरम जानु जेहि नाहीं ॥
 जोवन मरम जान पै चूड़ा । मिलै न तरुनापा जग चूड़ा ॥
 सुख कर मरम न जानै राजा । दुखी जान जा कहँ दुख वाजा ॥

दोहा

मरम जान पै रोगी, भोगी रहै निचंत ।
 सख कर मरम सो जानै, जो घट घट रह निन ॥ ७ ॥

चोपाई

अति अपार फरना कै करना । बरनि न कोऊ पावै बरना ॥
 मान मरग जो फागः करई । बरती मान समुद्र ममि भरई ॥
 जिवन जग मान्या बन द्वास्या । जिवन केस राम पवि पास्या ॥
 जिवत रोह रोह दुनियाई । मंत्र बूँद औ गगन तराई ॥
 सख लिखनी करि लिख समाऊ । लिखि न जायैगुनममु द्रष्टारू ॥
 एत कोन्ह मंत्र गुन परगटा । रहि समुद्र न रुद न घटा ॥
 'म नाति मन गरथ न होई । गरथ करै मन वाउर भाई ॥

श्लोक

बह गुनवन गुमाई बहै हाथ सो बेंग ।
 औ अम गुन' सवारै, जो गुन रुँ अनेग ॥ ८ ॥

(पञ्चवन)

कवित

दृष्टि चकचौंधि गई देवत सुभजनमई,
 एक ते सरस एक द्वारका के मौन है ।
 पूछे बिन कोऊ काहूँ में न करै धान,
 जहां देवता में बैठे मय साधि-साधि मौन है ॥
 देवत सुदामा धाय पुजजन गई पाय,
 'कृपा करि वही कहां कौनो विप्र गौन है ?'
 'धीरज अधीर के, हरन परपीर के बनाभो
 बटपीर के महल यहां कौन है ?' ॥

दोहा

डाग्पान घाँट नहँ गयो जहा कुण्ण तदुराय ।
 हाथ तारि टाँगे भयो धोल्याँ मौम नराय ॥५॥

तरीहा

मौम पगा न नैगा तन मे वनु जान, को आदि वसै किति पामा ?
 धोनी कली सा, कली दुपली अरु पति वधानरु की नति गामा ?
 द्वार मरुती दित नुयं । इति रथी चकिमा वगुना अभिरामा ।
 दीनदया, कः एते नाम, बनाएत आपुना नाम मुदामा ॥६॥
 आचने पूरि एत एत मा पनु नृतिन इत्यत हा दुम मरुत
 माच भया मुननाएक क कटपटम क शिव मक्ति मरुत्या ॥
 कतिव कुरु शिव नर मा पग जान मुमरु, एक मरुत्या ।
 एत भय नवरा तकरु मरि अत मरुपति मा द्विन मेरुता ॥७॥
 एत विहाउ वधानन मा अय कटक जाउ एत नृतिन जाव ।
 हाय नर नृम तया मरुता नून आव इने न कियो दिन थाय ॥
 एत मरुत्या कः एते रया कुरुना कतिव कुरुनाकर गेये ।
 पः एत कः एत एत नर नैतन क तत मा पग धाय ॥८॥

सवैया

भौत भरे पकवान मिठाइन, लोग कहें निधि हैं मुखमा के ।
 नाँक-सरेरे पिता अभिलापन, 'जैवै कवै हरि सग समा के' ॥
 चाम्हन एक काँऊ दुनिया मेर पावक 'चामर लायो समा के' ।
 प्रीति की रीति कहा कहिए, तिहि बैठे चकारत कन रमा के ॥१५१॥

शोक

मुठी दूसरी भगत ही मकिमिति पकरी बाह ।
 तेसी तुम्हें कहा भई सपति का अन्तचाह ॥१६॥
 कहा मकिमिनो कान मे, यह धौ कौन भिनाए !
 करत मुदामहि आप मो, होत मुदामा आप ॥१७॥

गवैया

हाथ गणेश प्रभु को कमला कहै, नाथ कहा तुमने चित्त बारी ।
 तदुल साथ मुठी दुइ दीन कियो तुमने दुइ लोकर-विहारी ॥
 रसाय मुठी निमरी अथ नाथ 'कहा निज वाम की आस धिमारी ।
 रकहि आप समान कियो तुम चाहत आपहि होत भिखारी ॥१८॥

कवित्त

कह्यो विश्वरुमा सो हरि 'तुम जाय करि
 नगरि सुदामाज की रचौ बेग अवही ।
 रतन-जटित धाम, सुचरनमई सब,
 कोट औ बजार बाग फूलन के नथही ॥
 कम्पवृन्द्य द्वार गज रथ असवार प्यारे
 काजियो अपार दास दामो देव ह्वही ।

अंतर दाव लगी रहै, पुआँ न प्रगटै सोय ।
 कै जिय जानै आपनो, (कै) जा सिर बाँधी होय ॥८॥
 कमला धिर न रहीम कहि, यह जानत सब कोय ।
 पुरुष पुरातन की बधू, क्यों न बचला होय ॥९॥
 कहि रहीम धन बढ़ि घटै, जाति धनिन की बात ।
 घटे बढ़े उनको कहा, घास बैचि जे खात ॥१०॥
 कहि रहीम संपति सगे, यनत बहुत बहु रीत ।
 विपति-कमौटी जे कसे, सोई सोचे मान ॥११॥
 कहु रहीम केतिक रही, केतिक गई विहाय ।
 माया ममता मोह परि, अंत चले पक्षिताय ॥१२॥
 कहु रहीम कैसे निभै, घेर केर को संग ।
 वै डोलत रस आपने, उनके फाटत अंग ॥१३॥
 कागद को सो पूतरा, सहजहि में घुरि जाय ।
 रहिमत यह अचरज लखो, मोऊ खींचत शाय ॥१४॥
 कैसे निवहैं निबल जन, करि सबलनि सो बैर ।
 रहिमत बसि सागर विपे, करत मगर सो बैर ॥१५॥
 खोरा मिर ने काटिण, मरियत नमक लगाय ।
 रहिमत करार मुयन को, चहियत इहै सजाय ॥१६॥
 लौर, लून, खर्मा, लुमी, बैर, प्रीति, मदपान ।
 रहिमत दावे ना दरे, जानत सकल जहान ॥१७॥
 द्विमा बडेन को चादिण, छाटेन को उतपात ।
 का रहीम हरि को घट्यो, जो भुगु मारी लात ॥१८॥
 जब लगि वित्त न आपने, तब लगि मित्र न कोय ।
 रहिमत अचुज अचु रिन, राव नाहिन हिन होय ॥१९॥

संग्रह

रहिमन मोहि न सुहाय, अभी पियावन मान बिन ।
जो विष देय जुलाय, प्रेमसहित मरियो भलो ॥८॥
(रहिमन के दोहे)

११—राज्य-श्री-निन्दा

[केशवदास—ग० १६०८—१६१८]

मञ्जिहा सुन्द

एक काल राम देव, सोधु बंधु करत संव ।

सोभिजेँ सबै सो और, मंत्रि मित्र ठौर-ठौर ॥ १ ॥

वानरेंम युधनाथ, लंकनाथ-बंधु साथ,

सोभिजेँ सबै समीप, डेम-डेम के महीप ॥ २ ॥

श्लोक

मरस स्वरूप विलोकि कै, उपजाँ मदनहि लाज ।

आइ गये ताही समय 'केशव' छपि अचिराज ॥ ३ ॥

असित, अत्रि, भृगु, अंगिर, कश्यप, केशव व्यास ।

विश्वामित्र, अगम्ययुत वान्सीकि, दुवाम' ॥ ४ ॥

वामदेव मुनि कण्वयुत भरद्वाज मनिनिष्ठ ।

पर्वनादि छै सकल मुनि आये महिन वशिष्ठ ॥ ५ ॥

नगवर्णपर्वण सुन्द

मयव गमबन्धु उठे विलोकि कै तब

मभा समंत पा पर विशेष पूजियाँ सबै ।

तोमर छंद

राम — मुनि ज्ञान मानस-हंस, जप जोग जाग प्रशंस ।

जगमांक है दुख-जाल, सुख है कहाँ इहिकाल ॥ १२

तहाँ राज है दुख-मूल, सब पाप को अनुकूल ।

अब ताहि लै ऋषिराय, कहि कौन नरकहि जाय ॥ १३

चौपारं

सोदर मत्रिन के जं चरित्र । इनके हम पै मुनि मरु-मित्र
 इनहीं लगे राज के काज । इनहीं तें सब होत अकाज
 राज भार नष्ट भैयनि दयो । दल बल छीनि सबै तिन लयो
 जय लीन्हो सब राज विधारि । नल-इमयती दियो निकारि
 राजा सुरधराज को गाथ । मोपी सब मत्रिन के हाथ
 सतत मृगश-रान विचारि । मत्रिन राजा दियो निकारि
 राज-श्री अति चबल नात । नाश का मुनि लीजे बाठ
 शैवन अरु त्रिवेणी रग । विनश्यो को न राज-श्री मग
 शास्त्र मुजलदु न पावन नात । मालिन होत अति नाके गाठ
 यद्यपि है अति दान-द दण्ड । तदपि मुजलि रागन की सृष्टि
 महापुरुष सो नाका धीन । हरनि सो नकभ्य मास्त रीति
 विषय मंगोचकानि का गीत । उन्ना हासन हासिनी होति
 गुरु के बचन अमठ अनुकट । मुनि होत मन्वन्तन को सुठ
 मैन बलिन नव वमन नृदश । भिदन नहीं जल ज्या उपदेश
 मित्रन ह का मतो न वनि । अतिशुन्दक ज्या उत्तर देवि
 पहिल सुनै न शार मुजनि । मार्ता कारणा ज्यो न गनवि

यद्यपि पुरुषोत्तम की नारि । तदपि मङ्गलालजन अनुहारि ॥
 द्विजहारिन की अनि ड्रेपिणी । अहित लोग की अन्वेपिणी ॥
 मन-भृग को सुवधिका की गीति । विषय-वेष्टि को वारिद-रीति ॥
 मद-भिराविका को मो अली । मोह-नोंद की शय्या भरी ॥
 आशीविष कोपनि की दरी । गुण-मग पुरुषन-कारन छरी ॥
 कल टमन को मंघावली । कपट-नृत्य-कारी की थली ॥

शेष

वाम काम-करि की किर्षी कोमल कदलि सुवेष ।
 धीर-धम-द्विजराज की, मनो राहु की रेख ॥२६॥

शेष

नृप-गर्गी भा मीने रहे । बान वृताय एक-द्वै करे ॥
 दम्प-वर्ग पहिचाने नहा । माना मन्निपान हे गरी ॥
 महा भव न नान न बाध । इमा हाट अति करि जनु श्रांथ ॥
 रत्न-विदाम-वादन आतुरी परदार गमने आतुरी ॥
 नृमथा रहे नृना बरी वरा मुर्खान बाध मो पड़ी ॥
 ना हन विनये यत्र दया । बान करे ना बड़ीवे मया ॥
 यमन दाव न अति दान नृप शरी नो बह मनमान ॥
 ना हन मा अवन करे । मवन को मो पदवी रहे ॥

शेष

नाह अति हन का करे म इ परम अमित्र
 मुख-वाश्रई तानय मन्त्र मत्री मित्र ॥२७॥

शेष

हरी हरी रंग नाह मात्र नुम मव जानन ही अविगत ॥
 रेखा किंच मूर्खन मन्त्रिय । नेमी गण्य भा जानिये ॥

सेम, महेस, गनेस, दिनेस, सुरेसहु जाहि निरंतर गावैं ।
जाहि अनादि, अनंत, अगंड, अछेद, अभेद, सुवेद बतावैं ॥
नारद से मुक व्यास रटैं पधि हारे तऊ पुनि पार न पावैं ।
ताहि अहीर की छोहरियो छदिया भरि छाछ पै नाच नचावैं ॥४१॥

५

धुरभरे अति सोभित स्वामजू तैसी धनी सिर सुन्दर चोटी ।
खेळत खात फिरैं अँगना, पग पैजनी बाजती, पारी कछोटी ॥
वा छवि को रसखानि विलोकत धारन काम कलानिधि कोटी ।
काग के भाग कहा कहिए हरि-हाथ सेां लै गयो माखन रोटी ॥४२॥

५

श्रीपति औ गनिका गज गीध अजामिल सां कियो सां न निहारो ।
गौतम-बोहिनी कैसे तरी, प्रह्लाद को कैसे हरयो दुख भारो ॥
काहे को सोच करै रसखानि, कहा करिहै रवि नंद' विचारो ।
कौन की मरु परी है जु माखन-चाखनहारो है राखनहारो ॥४३॥

(मुजान रसखान)

१३-भक्त-भावना

[मनापति-म० १६४५-१७००]

कवि

महामोह कदनि मे, जगत-जकदनि मे,
दिन दुख-ददनि मे जान है विहाय कै ।
मुख को न लेम है, कनेम सब भौतिन को,
मनापति याही ने कहन अकुशय कै ॥

१४—सुन्दर-विचार X

[सुन्दर-तं० १६५३-१७४६]

कवित्त

काहू सों न रोप तोप, काहू सों न गग-डोप,
 काहू सों न बैर भाव, काहू सों न घात है ।
 काहू सों न बकवाद, काहू सों नहीं विवाद,
 काहू सों न संग, न लौ काहू पन्द्रपात है ॥
 काहू सों न दुष्ट येन, काहू सों न लेन-देन,
 ब्रह्म को विचार, कष्ट और न सुहात है ।
 सुन्दर कहत मोई ईमन को महाईम,
 मोई गुरुदेव जाके दूमरो न बात है ॥ १ ॥

१५

पाँच गणि गते गनवाति गनयन कोर,
 हय गय गावत, गुरन चहाँ बल है ।
 वाकत जुभाऊ म'नाड भिन' गग पुनि
 मूननदि कायर हो गति बात कल है ॥
 नरकन पर हो निरश नरवादि बट्टे,
 मार मार कान परत गदधल है ।
 नम बुद्ध म थ'द ग मलय मभट मोई,
 पर नाति नरमा फडावन मरुल है ॥ २ ॥

१६

बट्ट का मनेही भौन विदुगन नरै प्रान,
 मनि विनु अदि नैमे जौवन न लहिये ।

तुच्छ भंग, बंद-भंग, अरथ भिन्नै न कस्यु,
 सुंदर कहत तेसी बानी नरी कहिए ॥५६

२५

गुनि जैसा भन जाके, गुनि सो संसार-गुण,
 भूति जैसा भाग देखी, जंन जैसी गारी है ।
 वाप जैसी प्रकृतार्थ, त्याग जैसा मनमान,
 बहाई विद्युनि जैसी, नागिनी गो नारी है ॥
 अजि जैसा इन्द्राक्ष, विज्र जैसा विविजोक,
 हीमनि जंनक जैसी, मित्रि भी ठगारी है ।
 कामता न चाइ बारी, तेसी अजि वन जाही,
 मृगत कहत नाहि बंजना हमारी है ॥५७

२६

रजन न काहुक विमलता दे रगतपति,
 रजन जैसा है साइ रजन भागु है ।
 न नरिजायत न नरि, जैसा जैसा है साइ
 रजन जंनक जैसा जैसा न कस्यु है ।
 इत न नरि न कस्यु है न नरि न कस्यु है ।
 नरि न कस्यु है न नरि न कस्यु है ।
 नरि न कस्यु है न नरि न कस्यु है ।
 नरि न कस्यु है न नरि न कस्यु है ।

३

रजन न कस्यु है न नरि न कस्यु है ।
 नरि न कस्यु है न नरि न कस्यु है ।
 नरि न कस्यु है न नरि न कस्यु है ।
 नरि न कस्यु है न नरि न कस्यु है ।



अधर धरत हरि के परन आठ दीठ पट जोति ।
 हरे बांम की बांसुरी इन्द्र-धनुष सी होति ॥ ९ ॥
 या अनुरागी चित्त की गति समुझै नहिं पौष ।
 ज्यों-ज्यों दूधै स्याम रंग, त्यों-त्यों उज्जल होय ॥ १० ॥
 कहा भयो जो पीछुरे, मो मन तो मन साथ ।
 उड़ी जाति कितहु गुड़ी, तऊ उदायक-हाय ॥ ११ ॥
 कहलाने एरुन बमत अहि-मयूर, मृग-बाध ।
 जगत तपोवन मो स्थियो दीर्घ दाष निदाष ॥ १२ ॥
 मनि भृङ्ग पंदावरी, करत दान मधु नीर ।
 मन्द-मन्द आवन चाल्यो कुंजर-कुञ्ज-समीर ॥ १३ ॥
 द्रुमड दुराज प्रजानि मो क्यो न बड़े अति दंद ।
 अधिक भीरों जग कहे निळि मानम रवि चन्द ॥ १४ ॥
 कहे बड़े मर अति सुमति, बड़े मयाने लोग ।
 न न दशावन निम्क ही, पानक राजा, रोग ॥ १५ ॥
 मरे ईसन कन्यास है नागरन क नवि ।
 ज्यो ज्येव गत मा मर उम गयार गवि ॥ १६ ॥
 ना बने लकन नै म न हाव न निन ।
 न न मय न उवाइव न न नौकन चिन ॥ १७ ॥
 न क अर न इनार क न न नै कवि जोड ।
 न न न न न न न न न न न न न न ॥ १८ ॥
 न न न न न न न न न न न न न न न न ।
 न न न न न न न न न न न न न न न न ॥ १९ ॥
 न न न न न न न न न न न न न न न न ।
 न न न न न न न न न न न न न न न न ॥ २० ॥

को छटयो इहि जाल परि, कत कुम्ह अकुलात ।
 ज्यों-ज्यों सुरक्ति भज्यो चहत, त्यों-त्यों उरमत्त जात ॥ २१ ॥
 कर लै सूँधि सराहि कै, रहै सबै गहि मौन ।
 गन्धी, गन्ध गुलाब के गँवई गाहक कौन ॥ २२ ॥
 वै न यहां नागर बड़े, जिन आदर तो आव ।
 फूल्यो अनफूल्यो भयो, गँवई गाँव गुलाब ॥ २३ ॥
 जदपि पुराने बक तऊ, सरवर निपट कुचाल ।
 नये भये तो कह भयो, ए मनहरन मराल ॥ २४ ॥
 दिन दम आदर पाव कै करिलै आपु बखान ।
 जौलौं पाग सराध-पग, तौलौं तो सनमान ॥ २५ ॥
 मरन प्याम पिजरा पररो मुवा समय के फेर ।
 आदर दै-दै पालियत वायम धनि की बेर ॥ २६ ॥
 चले जाहु त्यों को करत हाथिन ये व्योपार ।
 नहि जानत, या पुर बमत धाँधी और कुन्हार ॥ २७ ॥
 समै-समै मंदर मदै, रूप-रूप न पोय ।
 मन की रचि जेती जिनै, निव तेती रचि होय ॥ २८ ॥
 जगत जनायो जेहि मषल सो हनि जान्यो नहि ।
 ज्यो ओरिन सब देखिये, अंगिर न देखी जाति ॥ २९ ॥
 जपमाला टापा तिलक मरै न एकौ वान ।
 मन काँचे नाचै पृथा, साँचै रौचै राम ॥ ३० ॥
 हौ लनि या मन-मदन मे हरि आँद बिहि पाट ।
 बिषट जरै जौ लनि निपट गुलै न बपट-बपाट ॥ ३१ ॥
 यह किरिया नहि और की, तू करिया बह मोधि ।
 पाहन-नाद पदाय जिन बान्दे पार पयोधि ॥ ३२ ॥

भजन कस्यो तासों भज्यो, भज्यो न एकौ पार ।
 दूर भजन जासों कस्यो सो तू भज्यो गेंवार ॥ ३३ ॥
 पतवारी-भाला पकरि, और न जान उपाय ।
 तनि संसार-पयोधि कों, हरि-नामैं करि नाव ॥ ३४ ॥
 मून, मोहन सों मोह करि, तू धनस्याम निहारि ।
 कुंजविहारी सो विहरि, गिरिधारी उर धारि ॥ ३५ ॥
 दीगध मांस न लेइ दुग्ध, सुम्य माई नहिं भूल ।
 दई-दई कयो कगत टै, दई-दई मुकबूल ॥ ३६ ॥
 नोक्यो दई अनाकृत्यो, फीछी परी गुहारि ।
 मनो तथ्यो नागत विरद, थारक धारन तारि ॥ ३७ ॥
 जोरई गुन गेभने, विमराई बह यानि ।
 नुमन कान्ह भय मना आन-कान्हि के दानि ॥ ३८ ॥
 हय का हयन इनि ह, जान न ह्यो मदाय ।
 नुमन राजा न, ननुन ननुनाक नग-वाय ॥ ३९ ॥
 काउ काटिक मथई, काउ रामे नार ।
 का मथने ननुनि ननुन विप ननुननननन ॥ ४० ॥
 या इहा या ननुन ननुन ननुन ननुनी चाल ।
 ननुन ननुन ननुन ननुन ननुन ननुन ननुन ॥ ४१ ॥
 ननुन ननुन ननुन ननुन ननुन ननुन ननुन ॥ ४२ ॥
 ननुन ननुन ननुन ननुन ननुन ननुन ननुन ॥ ४३ ॥
 ननुन ननुन ननुन ननुन ननुन ननुन ननुन ॥ ४४ ॥
 ननुन ननुन ननुन ननुन ननुन ननुन ननुन ॥ ४५ ॥
 ननुन ननुन ननुन ननुन ननुन ननुन ननुन ॥ ४६ ॥
 ननुन ननुन ननुन ननुन ननुन ननुन ननुन ॥ ४७ ॥
 ननुन ननुन ननुन ननुन ननुन ननुन ननुन ॥ ४८ ॥
 ननुन ननुन ननुन ननुन ननुन ननुन ननुन ॥ ४९ ॥
 ननुन ननुन ननुन ननुन ननुन ननुन ननुन ॥ ५० ॥

राजि चतुरंग घोर-रंग मे तुरंग चदि,
 मरजा विवाजी जंग जीतन चलत है ।
 भूषन भनत नाद विद्द नगारन घं,
 नदी नद्गद् गन्धरन के श्लत है ॥
 पेल-पैल शैल-शैल शलक मे गैल-गैल,
 गजन पी टेल-पेल गैल लयलत है ।
 तारा यो तरनि धुरि-धारा मे लगत जिमि,
 शान पर पाग पागवार यो हलत है ॥ ५ ॥

५६

धित्त लतपैन, आंगू लगत गैन, देनिय,
 बीसी चट्टे रैन, मियो ! कतियत द्यतिगै ।
 भूषन भनत घृमे, आये दरवार मे,
 येंपत द्यारवार कयो रोभार तन ताः नै ।
 गोंगो धवधरत, परागो आयो ऐह रास,
 हीनो भयो भूष न चितौक धारो द्यतिगै,
 मित्राजी श्रीशंभु मानि नये हो मरतय, तुम्हे
 जानियत कविराज के मुखा' क ले द्यतिगै । ५७

५७

भांर धरि पातमार्ति रजसुदात । ५७ ॥
 नर बीनो जग रजसुदात । ५७ ॥
 मित्राजी रजसुदात । ५७ ॥
 मित्राजी रजसुदात । ५७ ॥
 मित्राजी रजसुदात । ५७ ॥
 मित्राजी रजसुदात । ५७ ॥

पंजन पेलि मल्लिच्छ मन्वो सव सोई बच्यौ जेहि दीन है माख्यो
सौ रंग है सिवराज बली, जेहि नौरंग'में रंग एक न राख्यौ ॥१४

ॐ

यों कवि भूपन भाषन है, इक लौ पहिले कलिठाल काँ सैली
ता पर हिंदुन की सव राइन नौरंग साह फरी अनि मैरी
साहि-तनै मित्र के हर साँ नुरकौ गदि वारिधि काँ गति पैली
बेद-पुरानन काँ चरचा, अरषा द्विज देवन की फिरि कैरी ॥१५

ॐ

दीन दयाल, दुनी-प्रतिपालक, जे करता निरम्लेन्द्र मही के
भूपन भूधर उद्धरियो मुने थोर जिते गन ते सबजी के
या कलि मे अवतार लिया, तऊ नेई सुभाष सिवाजी बली के
आय पर्यौ हरि ते नर रूप, पै काज करे मिगरे हरि ही के ॥१६

ॐ

तां कर भाँ छिनि छाजन दान है दानइ मो अनि नां कर छात्रै
ते ही गुनी काँ बडाई मजे अरु नेरी बडाई गुनी सव सात्रै
भूपन ताहि साँ गज विराजन, गज साँ नृ सिवराज विरात्रै
तो बन मो गद काँट गने अरु नृ गद काँटन के बल गात्रै ॥१७

ॐ

एक कहै कतपत्रम है इमि पृगन है सव काँ चित चाई
एक कहै अवतार मनाज काँ, यां नन मे अनि मुन्दरता है
भूपन एक कहै साह इन्द्रु यो, गज विराजन वाट्यौ मदा है
एक कहै नरसिंह है मगर एक कहै नरसिंह सिवा है ॥१८

दोहा

चक्रवर्तिन के बिन्हु सब, अंगन-अंगन राखि ।
छत्र-धर्म जब औतरपौ, सामुद्रिक* है साखि ॥ ३ ॥

चौपाई

जनम्यौ पुत्र उठी यह बानी । धन्य घरी सब हो बह भानी ॥
दुन्दुभि बजै लोक मुखदानो । आठो दिसा प्रसन्न दिरानी ॥
जात-धर्म कीन्हें सुखमूले । अमर पितर नर वर अति कूले ॥
वमैनि भरे नरनारी गावैं । पिता तुरंग नग कोप लुटावैं ॥
मतकवि-वदन नचां वर बानी । भिन्धुक-भौन लख्खमी रानी ॥
कांसि नची जगत मनभाई । विमल जौन्हमी छवि छिटकाई ॥
तिरुथौ छठी में मन्थ नचाई । दान जूक बल बूक बढ़ाई ॥
मन करनूनि करम के उँचे । जिन सम तयन तपो न पर्चे ॥

दोहा

ईस तखन अनुरूप अरु अरुधवत परिनाम ।
वनम-पत्र नाते लिख्यौ, छत्रमाळ यह नाम ॥ ४ ॥

चौपाई

अगट पासनी मे लखि डाड । नुवभर माहित कृपान उठाई ।
धुनुन चलन धुंधुन बापै । मिचिन मुनन इस हिय लाजै ।
गहि पनका को पाटी दातै । किलक = इसननि दुतिखोलै ।
विहंसन उठत भोर हो नागै । निरखन को न हिये अनुरागै ।
खेलन तेन विदोना आळ । जावन किलक छटि के पाळ ।
बाच सा तकरुन तुग ज नोकै । विहंस तेन मुजरा सबही के ।
दिन-दिन बटै बढ़ाड अनदा । जैम मुकल पन्ध को चदा ।

* सामुद्रिक उह अथा है, जिसके इ.स. कगीर पर के जिरों ।
कीकथ नावा त ना है

नैऋत्य नृप गुरु निय अन्तल, मध्य भाग जग माहि ।
 है विनाम अति निकट ते, दूर रहे फल नाहि ॥३॥
 भले-चुरे सब एकसे जौलीं बोलत नाहि ।
 जानि परत हें काक-पिक अन्तु वनंत के माहि ॥४॥
 चुरे लगत मियर के वचन, हिये विचारों आप ।
 करकी भेषज दिन पिये मिटै न तन की ताप ॥५॥
 नयना देत वनाय सब हिये को हेत अहेत ।
 जैसे निर्मल आरनी भयी-चुरी कहि देत ॥६॥
 पेरि न होई फल नों जो कीजै व्यौपार ।
 जैसे हांडी काठ की चढ़ति न दूजी धार ॥७॥
 थोड़े नर की प्रीति को दीनी नीति वनाय ।
 जैसे छालर ताल जल पटत-पटत घटि जाय ॥८॥
 विद्या धन उदम विना फाँही जु पावै फौन ।
 विना सुलाये ना मिली व्यौ पर्या की पौन ॥९॥
 रते समीप पढ़ेन के होत पढ़े तित मेल ।
 मर ही जानत पढ़त है शुक धगधर देव ॥१०॥
 पिमुन-दण्डो नर सुजननो परत दिसासन चूषि ।
 जैसे दाधो दूध को पीवत छा-ति पंषि ॥११॥
 कौ सुगई सुगय धई, जैसे पावै पाई ।
 सोई विरदा आप को जानत रहा ते होई ॥१२॥
 काय नाल गिरत को नीति-गिरत को होय ।
 शालत दिन को धरे, सोई नीर को होय ॥१३॥
 बरत बरत अ-गमते लहरति होत सुजन
 कभी कभी-जाने मिले पर परत निरन ॥१४॥

दीपो अक्सर को भलो जानों मुधरै काम ।
 श्वेती-सूखे बरसियो घन को कौन काम ॥२७॥
 अपनी पहुँच विचारि कै करतव करिए दौर ।
 नेते पाँव पमारिये जेता लौंवाँ सौर ॥२८॥
 कैसे निवहै निवह जन करि सबलन में गैर ।
 जैसे बसि मागर धिपे करत मगर में बैर ॥२९॥
 जाही ते कछु पाइये करिये तार्की आस ।
 गीते सरवर पं गये कैसे बुभति पियास ॥३०॥
 अति परचै ते होत है अरुचि अनादर भाय ।
 मलयागिरि की भालनी चंदन दंत जराय ॥३१॥
 रस अनरस समुझै न कछु पढ़ै प्रेम की गाय ।
 बाँटू मंत्र न जानही साँप पिटारै हाथ ॥३२॥
 जो पावै अति उच्च पद ताको पतन निदान ।
 अ्यों तपि-तपि मध्यान्ह लौं अस्त होत है भान ॥३३॥
 बहुत निश्चल मिलि बल करै करै जु चाहै मोय ।
 दिनवन की रमरी करी, करी-निशंभन होय ॥३४॥
 बारज धीरे होत है, बाहं होतु अधीर ?
 समय पाय नखवर फलै, बतक सीचौ नीर ॥३५॥
 जे पतन से क्यों तज जाको जासो मोह ।
 गुंथक के पीछे लग्यो फिरत अचेतन लोह ॥३६॥
 गूरख गुन समझे नहीं ती न गुनी मे चूक ।
 कहा पल्यो दिन काँ दिभाँ, देखै जो न छलक ॥३७॥
 जूबा बंसे होतु है गुम्य संपति काँ नान ।
 राज बाज नल ते हृदयो, पाँहव बिय हनवान ॥३८॥

बिना विचारें जे करै सो पाछे पछिनाय ।
 काज विचारै आपनो, जग में होति हेमाय ॥
 जग में होति हेमाय, चित्त में धैर्य न पावै ।
 ब्याज पात मनमान राग रंग मनहि न भावै ॥
 कह गिरिधर कविगाय दुःख कष्ट दरत न टारै ।
 अटल है त्रिय मादि, कियो जे बिना विचारै ॥ १२ ॥

२३—गंगा-गुण-गान

[पञ्चाङ्ग—सं० १५:००:०६५]

राज

कुरम पै काठ, काठ पै गेय-कुंडली है,
 कुंडली पै कवी कैठ मुकुन हजार की ।
 कष्टे पदमाकर ल्यो फल पै कवी है भूमि,
 भूमि पै कवी है विनि रजत-पहार की ॥
 रजत-पहार पर मनु मुरनायक है,
 मनु पर नाति जटा-बूट है अपार की ।
 नाति जटा-बूटन पै बड की छुटो है छटा,
 बड की छटान पै छटा है गग-धार की ॥ १ ॥

२

देव न न साध कइ नकर इगत दूता,
 म अरु न सा रीह नकर न हरिद्वी ।
 कष्टे पदमाकर अरु न सा रीह नदी,
 अरु न सा रीह न सा रीह नदी ॥

बधि त्रया-श्रुट सैठि परवन कूट मादि,
 महा कालझट कही कैसे के ठहरतो ?
 पावे नित भंगे, रट्टे प्रेतन के संगे जैसे
 पूरतो दो नंगे जो न गंगे सोम धरतो ॥१०६॥



सुधं भये जे हैं नर गंगा के अन्हाइवे को
 कामी बदनामी भामी कैयक करोर हैं ।
 कहे पदमाकर न्यौं तिनकी अवाइन के
 माचि रहे जोर सुरलोचन में मोर हैं ॥
 बार-बार हाटसी लगाये लखें घाट-घाट,
 वाट हों तीर में करैषी तन बोर हैं ।
 एक ओर गङ्गा, मुहस एक ओर ठाढ़े,
 एक ओर जादिया विमान एक ओर हैं ॥१०७॥



गङ्गा न भोगम, विद्याम में, संयागम
 गङ्गा भ, रम में न नकी विमगाइये ।
 कहे पदमाकर पूरा म पुन्य, गौरव में,
 हैं न म कै अकैलि गैलन में गाइये ॥
 बगिनम, रनु में, विद्यामें यमचारनमें,
 विषम म रनमें नदा-जहा चाइये ।

कृतम। म स्थान कानकावे के निव, उपके परत मपय, निरपु है
 गकड, बजान इ र, गिग न नही और इ-इ न विधान भना, परयेक देवता
 कने काने गोक न रचना चाइता है ।

भूलै ज़ोवन के न मद्, अरी बावरी धाम !
 यह नैहर दिन दोष को, अन्त कंत तें काम ॥
 अन्त कंत तें काम, तंत सब ही तजि दै री ।
 जानै रीभै नाह, नेह नव ताते कै री ॥
 बरनै दीनदयाल, भूसि भूसन अनुसू ।
 चलि पिय-नेह, सनेह साजि, लसि देह न भूने ॥११॥

(भोवी)

एरे मेरे धोयिया, तोमों भापन टेरि ।
 ऐसी धोनी धोय है, मैला होय न फेरि ॥
 मैला होय न फेरि, चीर यहि नीर न आवै ॥
 मायुन लख विचारि, मैल जाने छुटि जावै ॥
 बरनै दीनदयाल, रग चडिहै चहुं फेरं ।
 जा नु दैहै धोय, भले जल कजल हरे ॥१२॥

(कपन)

दास है ते कज फंसि चचरीक नुम सादि ।
 याका नोके राखिण दुखिन कीजिण नाहि ॥
 दुखिन काजिण नाहि, दीजिण रम धरि आगे ।
 मय्य रावरं हेन सबै इन सौभ न्यागे ।
 बरनै दीनदयाल प्रेम को पैदा न्यारो ।
 बाहर ज वै यो मिनिह दास को बेप्रनिहारो ॥१३॥

(गोपी)

न-द्वेष राख न नु धमै प्रेम कार खाल
 सब वैराग्य ३ नरक राम मति अनमोद ॥

कबहुँ होत सतचंद्र, कबहुँ प्रगटत दुरि भाजत ।
 पवनगवन-वस विम्बरूप जल में बहु साजत ॥
 मनु ससि भरि अनुराग जमुन-जल लोटत डोलै ।
 कै तरंग की डोर हिंडोरन करति कलोलै ॥
 कै बालगुड़ी नभ में उड़ी, सोहति इत-उत धावती ।
 कै अवगाहत डोलत कोऊ ब्रज-रमनी जल आवती ॥६॥



मनु जुग पच्छ प्रतच्छ होत मिटि जात जमुन जल ।
 कै तारागन ठगन लुकत प्रगटत ससि अविफल ॥
 कै कालिन्दी-नीर तरंग जिती उपजावत ।
 नितनोंहो धरि रूप मिलन-हित तासों धावत ॥
 कै बहुत रजत चकई चलति, कै फुहार-जल उच्छरत ।
 कै निमिपति-मल्ल अनेक विधि, उटि, बैठन, कमरत करत ॥७॥



कूजत कहुँ कल' हंस, कहुँ मञ्जत पारावत ।
 कहुँ कारंडव उड़त, कहुँ जल कुक्कुट धावत ॥
 चक्रवाक कहुँ वसत, कहुँ वक्र ध्यान लगावत ।
 सुक पिक जल कहुँ पियत, कहुँ भ्रमरावलि गावत ॥
 कहुँ तट पर नाचत मोर घहु, रोर विविध पच्छी करत ।
 जलपान न्दान करि मुख-भरे तट-सोभा सध जिय धरत ॥८॥



कहुँ बालुका विमल सकल कोमल बहु छाई ।
 नञ्जल भलकत रजत सिद्धी मनु मास सुछाई ॥
 पियके आगम-हेत पाँवड़े मनहुँ विधाये ।
 रत्न-रासि करि चूर फूल पै मनु बगराये ॥

मनु मुक्त मोंग सोभित-भरी स्याम नीर चिहुरन परसि ।
 सतगुन छायो कै सीर में मज-निवास छलि हिप हरसि ॥५॥
 (अम्बाजी नाटिका)

(२) स्मशान

श्लोक

सोई मुख, सोई उदर, सोई कर पद दोय ।
 भयो आज कछु औरही परसत जेहि नहिं फोय ॥
 हाड़, मांस, लाडा, रक्त, बसा, तुषा सय सोय ।
 द्विध-भिन्न दुरगधमय मरे मनुष के होय ॥१॥

शेषार्थ

फलवानहु जिन न सम्हारे । जिन पै बांभ काठ बहु हारे ।
 भस पाडा जिनको नहिं रग करन कपान्ट क्रिया जिन केरी ॥
 हनन न न भये कछु नश्य । तेन वामन छोडि सिधारे ॥
 ना-र कर महोष हारन आजु काक नेहि भोजविचारत ॥
 नज रज न नहिं नृपन नभाय न लरिययनमुख कफन छिपाये ॥
 नरपाल भजा नरकियनु कर । गन कार मय एकहि लेखे ॥
 न-ना कृषय प्रमून विपमान । आजु मरे इक भाव विकाने ॥
 मर श्वाच हाड अथ नाही । मर नाम हो प्रन्थन माही ॥२॥

× × × × × × ×

— ५

मन मार पट १ १ रन रति सुन गदरग हाव लछो है ।
 उ गारन मत्र कछो है ॥

मद्य-भरो नर खोपरी सो ससि को नव विंभहु धाइ गह्यो है ।
 है यलि जीव पसू यह मत्त है काल-कपालिक नाचि रह्यो है ॥३॥



सूरज धूम बिना को चिता, सोइ अंत में लै जल माहिं बहाई ।
 बोलें घने तरु वैठि बिहंगम, रोवत सो मनु लोग लुगाई ॥
 धूम अंध्यार, कपाल निसाकर, द्वाड़ नद्धत्र, लहूसी ललाई ।
 आनंद हेतु निसाचर के यह काल मसान सी सांभ बनाई ॥४॥

छप्पय

रुग्ग्या चहुँ दिसि ररत, डरत नुनिकै नर-नारी ।
 फटफटाय दोउ पंख उलकहु रदत पुकारी ॥
 अंधकार-बस गिरत काक अरु चील्ह करत ख ।
 गिद्ध, गरुड़, हड़गिल्ल भजत लखि निकट भयद दव ॥

रोवत सियार, नरजत नदी, न्वान भूँकि डरपावड़े ।
 सँग दादुर-भोगुर-रुदन-धुनि मिलि स्वर तुमुल मचावड़े ॥५॥

(सत्य हरिश्चन्द्र नाटक)

(३) प्रेम-प्रलाप

पद

अहो हरि, यम, अम बहुत भई ।

अपनी दिनि विलोकि करनानिधि कीजै नाहिं नई ॥
 जो हमरे दोषन को देखौ, ती न निवाह हमारो ।
 करि कै नुरत अजामिल, गज को हमरे करम दिमारो ॥

हिन्दी-पत्र-रत्नावली

अब नहिं सही जानि कोऊ विधि, धीर सकन नहिं धारी
हरीचंद को बेगि थाडके भुज भरि लेहु धरारी ।



पियारं, याको नांव नियाव ?

तो तोहि भजै ताहि नहि भजनो कीनो भनों बनाव ॥
धिन कछु किये जानि अपना जन दुनो दुख तोहि देनो ।
भर्या नई यह रीति पलाइ, उलटो अवगुन लेनो ॥
हरीचंद यह भनो नियोगो हैकै अनरजामो ।
चोरन शौड शौडि कै टांटी इननो जन को ग्यामी ॥ २



मभारत अयन का गिरि शरी ।

मार मुकुट मिर गगन इन ममि नासहु अरुच मशरी ॥
एव न सकन बनमा ॥ १ ॥ मुरा नास उतारी ।
वकीरिजन म... ॥ २ ॥ कन ममन निवारी ॥
... ॥ ३ ॥ ... ॥
... ॥ ४ ॥ ... ॥
... ॥ ५ ॥ ... ॥
... ॥ ६ ॥ ... ॥
... ॥ ७ ॥ ... ॥
... ॥ ८ ॥ ... ॥
... ॥ ९ ॥ ... ॥
... ॥ १० ॥ ... ॥



... ॥ ११ ॥ ... ॥

... ॥ १२ ॥ ... ॥
... ॥ १३ ॥ ... ॥
... ॥ १४ ॥ ... ॥
... ॥ १५ ॥ ... ॥
... ॥ १६ ॥ ... ॥
... ॥ १७ ॥ ... ॥
... ॥ १८ ॥ ... ॥
... ॥ १९ ॥ ... ॥
... ॥ २० ॥ ... ॥

जियत रहँ महाराज सदा जो हम गेल्यन का पालति हैं ।
 नाहीं तो श्रव कोधो पृष्टै केहि के कौने काम के हन ॥ ४ ॥

(३) कुछकर पद

साधो, मनुवा श्रजव दिवाना ।

माया मोह जनम के ठगिया, तिन के रूप लुभाना ॥
 छल परपंच करत जग धृतत, दुख को सुख करि माना ।
 फिकिर तहां की तनिक नहीं है, अंत समय जहँ जाना ॥
 मुखते धरम-धरम गोहरावन, करम करत मन-भाना ।
 जा साह्य घट-घट की जानै, तेहि ते करत बहाना ॥
 तेहि ते पृथ्वी मारग घर को आपहि जौन बुलाना ।
 'दियां कहां सज्जन कर वाना, दाय न इतनी जाना ॥
 यहि मनुवा के पाछे, चलि के मुख का कहां ठिकाना ।
 जो परताप राम के चीन्है मोटै परन नगना ॥ १ ॥



जागो भाई, जागो रात श्रव धोरि

काल-चोर नहि करन चहन है जावन-धन की चोरि ॥
 औसर चूके फिर पछितेही दाय मीजि मिर फोरि ।
 काम करा, नहि काम न रहे चाते फोरि-फोरि ॥
 जो कहु पीला वीत चुकी ना चिना ते मुख मोरा ।
 आगे जागे वने ना पाजे, करि तननन इष्ट टोरि ॥
 फाड़ का का नहि मार्य नात पिना नुठ गोरि ।
 अपने करम आपन नगा, और भावना भोरि ॥

वॉय वाप की पाग बना मुन्धिया घर का मैं ।

केवल परमाधार रहा कुन्ने भर का मैं ॥

सुख से पहिली भौंति निरंकुरा रहता था मैं ।

क्या करता है कौन, न कुछ भी पहता था मैं ॥ ५ ॥

जिनका संचित कोश तिलाया-खाया मैंने ।

करके उनकी होड़ न द्रव्य कमाया मैंने ॥

लट रहे थे लोग, न द्रव्य पहचाना मैंने ।

घाटे का परिणाम कठोर न जाना मैंने ॥ ६ ॥

विगाड़ चाकर चोर पुराने घान विगाड़ी ।

दिया दिवाना काट, यनी दूकान विगाड़ी ।

आये दाम चुकाय बड़ों की घात विगाड़ी ।

नुक से किया विगाड़, न अपनी घात विगाड़ी ॥ ७ ॥

अटके डिगरोदार, किसी ने दाम न छोड़े ।

छोन लिये धन-धाम-धाम, आराम न छोड़े ॥

हाय ! किसी के पाम विभूषण-वत्त न छोड़े ।

नाम रहा निरुपाधि, पुलित ने शक्त न छोड़े ॥ ८ ॥

न्यायालय में जाय दरिद्र कहाय चुका हूँ ।

भव देकर 'इनसालवेट' पद पाय चुका हूँ ॥

अपने घर की आप विभूति उड़ाय चुका हूँ ।

सर्वनाश से हाय न पिठ छुड़ाय चुका हूँ ॥ ९ ॥

बैठ रहे मुख मोड़ पुगने आनेवाले ।

नेने नहीं प्रमान लट कर गानेवाले ॥

देने हैं दुर्वाह बड़ाई करनेवाले ।

लड़ने हैं बिन बच नही पर नानेवाले ॥ १० ॥

गम-सभाओं, मेलाओं, गाथों में भी गति पाती है ।
 शलाघा की लोलुपता सबको अपनी चाह सिखाती है ।
 कर-कर प्रिय बर्ताव परम्पर प्रसन्नता सब पाते हैं ।
 जैसे मुखित दोखते वैसे सचमुच ही हो जाते हैं ॥ ४ ॥
 किन्तु मृदुल गुणमय कौराड यह सुखद उन्हें यदि होता है ।
 उनके बरके मध्य मूर्खता का अंशुर भी बोता है ।
 क्योंकि प्रशंसाकी इच्छा जब अधिक प्रबल हो जाती है ।
 मनुष्य के भीतरी विचारों में निर्वन्धता लाता है ॥ ५ ॥

(शब्द)

अन्य प्रकृति के लोगों पर मेरा विचार अब जाता है ।
 जहा मिथु-उर-आलिगित 'हालैण्ड' दश छवि छाता है ॥
 धीमा बहना नहर, तराई पाले पुष्पां से छाई ।
 'बिलों' न. डमरु नार, पाल-गामिनि' नावा की सुषराई ॥ ६ ॥
 मरी भोंड से टाट, सत्युत भूलल हाथ गांभाधारी ।
 नृष्टि एक नृत्न, जा उम्म मनुज-शक्तिने उद्गारी ॥
 वा जब वी' की भूमि निरतर जल-विशय जो मही है ।
 बार बार लोगों को अमकी ओर लगाती रहती है ॥ ७ ॥
 परम की तट प्रकृति नभा उरम अधियेन करता है ।
 उरम से फिर उर-गम की अभिगथा नन करता है ।
 'उर दस' उरि नरम नृष्टि से तटि कपल-धरा आता है ।
 'न-वत' का भी कट-विकर उर उर दुखा जाता है ॥ ८ ॥
 'न-वत' का भी कट-विकर उर उर दुखा जाता है ॥ ८ ॥
 'न-वत' का भी कट-विकर उर उर दुखा जाता है ॥ ८ ॥

- इसमय बचनों से नाथ ! जो सर्वज्ञ ही
 मम-सदन बहाता स्वर्ग-मंशकिनी था ।
 भुनि पुट टपकता रेंद जो था मुधा की,
 वह नव श्वनि न्यारी मंजुना की कहां है ? ॥ १ ॥
- स्वकृष्ण-जलज का है जो समुत्कुलरारी,
 मम परम निराशा-श्रामिनी का विनारी ।
 वन-जन-विहंगों के वृन्द का मोद-दाता,
 वह दिनकर-शोभी राम-भ्राता कहां है ? ॥ २ ॥
- मृग्य पर तिमके है मौम्यता खेली सी,
 अनुपम तिमका है शीत सौजन्य पायी ।
 पर-दुग्ध लय के है जो ममुद्रित होता,
 वह मर-रूपने का म्वन्द्य माला कहां है ? ॥ ३ ॥
- 'ह-निमिष निगना का समार्दणं जो था,
 नित मृग्य दुर्नि में है जो तम ध्यमकारी ।
 लक्ष्य पर तिममें है कामिनी-जग्य मंग,
 वह शोचकर चित्रा का चिन्ता कहां है ? ॥ ४ ॥
- 'हकर कितन ही कष्ट थी मकरो की,
 बहु यत्न कराए पूत क निर्तरो की ।
 'ह मृगन मिश्र ? ना मृद यत्न-दाग
 'अथनम वर मग कथा 'याग कहां है ? ॥ ५ ॥
- शीतल कला ता मद्य का था दुहा-मा,
 कल्प कला था ज्ञा स्वर्गो-मा बनो में ।
 सुधरित विद्यो ना कटिका या यतला,
 वह कल्पित कला का विधाता कहां है ? ॥ ६ ॥









जिन पराग मों चोंकि भ्रमत उत्सुकता-प्रेरे,
रहसि-रहसि रसखानि रतिक अलि गुंज घनेरे ।
बरन-बरन में मोहन की प्रतिमूर्ति विराजति,
अच्छर आभा जासु अलौकिक अद्भुत भाजति ॥ ८ ॥

सुस्र पद धरन सुभाव विविध रसमय प्रति उत्तम;
शुद्ध संस्कृत सुखद आत्मजा अभिनव अनुपम ।
देस-काल-अनुसार भाव निज व्यक्त करन में,
मंजु मनोहर भाषा या सम कोउ न जग में ॥ ९ ॥

ईश्वर-मानव प्रेम दोउ इकसंग सिखावति;
उज्जल स्यामल धार जुगल यों जोरि मिलावति ।
भेद-भाव तजिवे की प्रतिभा जब रस-पेनी,
योग गहत तिनसों तव मुन्दर वहति त्रिवेनी ॥१०॥

करी जाय यदि जासु परीच्छा सविधि जथारथ,
वाही में सब जग कौ स्वारथ अरु परमारथ ।
वरनन का फरि सकै भला तिह भाषा-कोटी,
मचलि-मचलि मांगी जामें हरि माखन-रोटी ? ॥११॥

जाकौ जो रस अवगाहत जाही में आवैं ।
कैसो हू गुनवान थाह जाकी नहि पावैं ॥
रहौ यही अवसेस एक आरज-जावनधन,
चितनीय यह विषय तुमनु सों सब सज्जन-गन ॥१२॥

बंग और महाराष्ट्र, सुगम गुजरात देस में,
अटक कटक पर्यन्त कहिय भारत असेस में ।
एक राष्ट्र-भाषा की त्रुटि जो पूरत आई,
इतने दिन सों करव रही तुहारी सिवकाई ॥१३॥

सुवन्नेया-द्वित नामु रश्मि रश्मि रश्मि सदाही ।
 जनमें पूं कुपूत, कुमाना माना नाहीं० ॥१९॥
 जाय कहां अथ, वनहि तुम्हें वदि पाले-पोसे ।
 याकी वल याकी जीवन वस थाप भरोसे;
 निरालंब यह अंध, याहि अवलंबनु दीजे;
 ननसों, मनसों, धनसों याकी रच्छा कीजे ॥२०॥
 यही रश्मि जननों की केवल निन अभिलाषा—
 'सकल होहि तुव नयें उच्च उन्नत प्रिय आशा !
 सकल श्रार अभ्युदय-मूर्य की किरन प्रकाशें !
 नसहि श्रविशारेनि, ज्ञान-मय-कमल विक्रासें ॥२१॥
 'जागृति त्रिविध चयारि वमन्ती नित सरसावै !
 निरमल पर उपकार हृदय मधि लहरि सुहावै !
 मोहें मुज्जन रमाल, प्रेम-मंजरि चहुँ छावै !
 निज-भाषा-रश्मि-लता श्रद्ध लहि परम सुहावै ॥२२॥
 'कवि-कोकिल सत्काव्य-कृक अपनो उचारै !
 गुनि गुन-गाहक रसिक भ्रमर मंजुल गुंजारै !
 जगमगाय जातीय प्रेम, सुघरै चरित्र-चल ;
 सबके हों आदर्श उच्च, उत्तम अरु उज्ज्वल ! २३॥
 'विद्या-विनय विवंक प्रकृति-छवि मनहिं लुभावै !
 दुख को हों वस अन्न, देम भारत सुख प्रावै !
 परब्रह्म परमात्मन घट-घट अन्तरजामी,
 पूरहिं यह अभिलाष सत्य नारायण स्वामी ! २४॥

(द्वय-नरंग)

* कुपुत्री जायत क्वचिदपि कुमाना न भवति—श्रीगणेशाय ।

■

■

विपथर बनेगा रोप मेरा खल ! तुम्हें पाताल में,
 दावान्नि होगा विपिन में, बाड़व जलधि-जल-जाल में ।
 जो व्योम में तू जायगा तो बस्र वह धन जायगा,
 चाहे जहाँ जा कर रहे जीवन न तू रह पायगा ॥१४५॥

छोटे-बड़े जितने जगत् में पुण्य नाराक पाप हैं,
 लौकिक तथा जो पारलौकिक तीक्ष्णतर मंताप हैं ।
 हों प्राप्त वे सब सर्वदा को तो विलंब विना मुझे,
 कज्युद्ध में संध्या-समय तक, जो न मैं माहूँ तुम्हें ॥१४६॥

अथवा अधिक कहना वृथा है, पार्थ का प्रण है यहाँ,
 माघी रहे मुन ये वचन रवि, शशि, अनल, अंबर, मही ।
 मूर्धास से पहले न जो मैं कल जयद्रथ-वध करूँ,
 तो शपथ करता हूँ, स्वयं मैं ही अनल में जल मरूँ ॥१४७॥

(जयद्रथ-वध, सर्ग ३)



शब्दार्थ

१—पद्मावती-परिणय

- १—उर=हृदय, पेट, गर्भ । भान=भानु ।
 २—त्रिभय=घनी हुई है । हीर=हीरा, यहां दाँतों से उपमा दी गयी है । कीर=तोता, यहाँ नाक से उपमा दी गयी है । विम्ब=विम्ब फल, अधरोष्ठ से उपमा दी गयी है । विह=उसे, विधाता । सचि=शची, इन्द्राणी ।
 ४—चुष्टृयो=लग गया, फँस गया । कुल्ल=प्रसन्न ।
 ८—संभरि=सोंभर प्रांत ।
 ९—बैसह=वयः, उम्र । वरीस=वर्ष ।
 ११—पानीय=तेज, कान्ति ।
 १२—कद्रूप=कामदेव ।
 १३—सुरत्तह=प्रेम, लगन ।
 १४—केली=प्रसन्न ।
 १८—कगर=कागज, पत्र ।
 १९—वंव=बाजा ।
 २०—सूक=शुक, तोता ।
 २१—चिकट=मैला, कुचैला ।
 २२—नवसत=सोलह ।
 २४—सौत्रन्न=सुवर्ण ।
 २५—जेम=जैसे ।
 २६—गवरि=गौरी, पार्वती ।
 २७—मुद्ध मुद्ध=धीरे धीरे ।
 ३०—पलान=तैयार किये गये ।

- येदन=येदना. शत्रु ।
- सौकर्य=संग ।
- माल=भोजनी ।
- मिग्न=मिथ्य ।
- नेष्टे=भंड ।
- रंरह=धूल ।
- उपाधि=दुःख ।
- धनी=मालिक. ईश्वर । निशाजई=कृपा करंगा ।
- मेदि रहना=टट जाना ।
- लंघना=भ्रम ।
- लाल=प्यारा, ईश्वर । लाली देयन ... लाल=ब्रह्मवेना ब्रह्म ही हो जाता है, यही इसका तात्पर्य है । उपनिषद् में भी "ब्रह्मविद् ब्रह्मैव भवति" कहा गया है ।
- मोटी=घटी । बिना जीव की मांस=भोजनी ।
- शेदार=दर्शन ।
- संचरै=प्रवेश करता है । मालै=कष्ट पहुँचाना है ।
- ग्योटी=निकरमी । वाट=रास्ता ।
- पैठ=हाट ।
- पला=पदा ।
- भ्रगु=एक ऋषि, जिन्होंने ब्रह्मा, विष्णु और शिव के शील की परीक्षा ली थी । ब्रह्मा और शिव तो इस परीक्षा में उत्तीर्ण न हुए, पर विष्णु भगवान ऋषि की लात का आघात सह कर टलते उनकी विनय करने लगे !
- इतराय=पेंठठा है ।

२१—वेदन=वेदना, कष्ट ।

२३—सॉकरी=तंग ।

२४—खाल=धोकनी ।

२८—सिख=शिष्य ।

२९—लेहेंडे=भंड ।

३०—ग्वह=धूल ।

३२—उपाधि=दुःख ।

३३—धनी=मालिक, ईश्वर । निवाजई=कृपा करेगा ।

३५—मॅड़ि रहना=डट जाना ।

३६—लंघना=भूखा ।

३८—लाल=प्यारा, ईश्वर । लाली देखन ... लाल=ब्रह्मवेत्ता ब्रह्म ही हो जाता है, यही इसका तात्पर्य है । उपनिषद् में भी “ब्रह्मविद् ब्रह्मैव भवति” कहा गया है ।

४०—मोटी=बड़ी । बिना जीव की मांस=धोकनी ।

४४—त्रीदार=दर्शन ।

४६—संपरै=प्रवेश करता है । मालै=यष्ट पट्टेघाना है ।

४८—खोटी=निषमनी । दाट=गाला ।

५१—पँठ=हाट ।

५७—पला=पहा ।

६०—भगु=एक ऋषि, जिन्होंने ब्रह्मा, विष्णु और शिव के शील की परीक्षा ली थी । ब्रह्मा और शिव तो इस परीक्षा में उत्तीर्ण न हुए, पर विष्णु भगवान ऋषि की लान का आचान सह कर उलटे उनकी विनय करने लगे ।

६८—इतराव=पेठना है ।

३१—अपि=ललकार कर । सप्ताह=कवच ।

३२—तत्ते=तच्छ ।

३३—याग=पाँडे की लगाम । नाग=शेष ।

३५—धोन=रक्त ।

३७—रिनस्येन=रगुक्षेत्र । रूप=रस्य ।

३९—धुर=मंत्र । पती=पंक्ति । नालि=नली, बंदूक । तीरह=तीर ।
मार=लंका, पक्ष । गजनेम=गजनी का बादशाह राधापुरीन
गौरी ।

४०—धिही=चांगे । धोजु=धितलो । मूर=सूर्य । कौनिग=कौतुक ।
रगन मगन=मराधार । लयपथ । धर=पृथ्वी ।

४१—नह=न ।

४४—परिट्टिय=निश्चय का । हर धामह=हरे धाम । गठिय=गठि
वाँच कर किय=किया । कइयो=कहिनि किया, जुमाना
आदि किया । दुग्गा=दुग शिखा । हचर=हजर ।

८—कबीरदास की सान्निध्य और शब्द

१—इतनाम=इतनाम ।

२—बनगार=बनगार बहा नगल पद मसि=इयाही ।

३—आदि न ल परल न का नाम मय नाम ।

४—अपि=ललकार

५—मनुष्य=मनु

६—कबीरदास=कबीरदास

७—कबीरदास=कबीरदास

८—कबीरदास=कबीरदास कबीर ही का नाम मसि म म एक है,
'कबीर' का नाम मसि म म कबीर का नाम मसि म म एक है ।

९—कबीरदास=कबीरदास

- २१—वेदन=वेदना, कष्ट ।
 २२—सौकरी=तंग ।
 २४—खाल=धोकनी ।
 २८—सिख=शिष्य ।
 २९—लेहेंदें=भंड ।
 ३०—ग्यह=धूल ।
 ३२—उपाधि=दुःख ।
 ३३—धनी=मालिक, ईश्वर । निवाजई=कृपा करेगा ।
 ३५—मैंदि रहना=डट जाना ।
 ३६—लंघना=भ्रम ।
 ३८—लाल=प्यारा, ईश्वर । लाली देगन ... लाल=मदमवेत्ता मन्त्र ही हो जाता है, यही इसका तात्पर्य है । उपनिषद् में भी "मदमविद् मन्त्रैव भवति" कहा गया है ।
 ४०—मोटी=बटी । बिना जीव की मांस=धोकनी ।
 ४४—दीदार=दर्शन ।
 ४६—संचरै=प्रवेश करता है । मालै=षष्ठ पट्टिघाना है ।
 ४८—गोटी=निकरमां । बाट=राम्ना ।
 ५१—पैठ=हाट ।
 ५५—पला=पला ।
 ६०—भगु=एक ऋषि, जिन्होंने ब्रह्मा, विष्णु और शिव के शंकर की परीक्षा ली थी । ब्रह्मा और शिव तो हम परीक्षा में उत्तीर्ण न हुए, पर विष्णु भगवान् ऋषि की आज्ञा का पालन करते हुए बर उलटें उनकी विनय करने लगे ।
 ६८—इतराद=पेटला है ।

३१—अंपि=ललकार कर । मझाह=कथच ।

३२—तत्ते = तंज ।

३३—बाग=घोड़े की लगाम । नाग = शेष ।

३५—धोन=रक्त ।

३७—रिनखेत=रणक्षेत्र । रूप्य=रुख ।

३९—धुर=मेघ । पत्ती=पंक्ति । नालि=नली, बंदूक । तीरह=तीर । सार=लोहा, यज्ञ । गजनेस=गजनी का बादशाह शहबुर्जिन गौरी ।

४०—चिहौ=चारो । बांजु=बिजली । मूर=मूर्य । कौनिग=कौतुक । रगन मगन=मरादार, लथपथ । धर=पृथ्वी ।

४१—नह=न ।

४४—परिट्ठिय=निश्चित की । हर धांसह=हरे धांस । गठिय=गौठ बांध कर । किन्न=रिया । दटयो=दहित किया, जुमाना आदि लिया । इग्गा=दुग किया । हुनर=दुनूर ।

०—कबीरदास की साम्बियों और शब्द

१—परनाम=प्रणाम ।

२—वनराज=वनराज बड़ा नगल पद । मामे=स्वाही ।

५—आदि नाम=परमा मा का नाम मय नाम ।

६—मिलि=पदर ।

११—मनुधा=मन ।

१३—जरी=बुद्धापा । मुड=मरी ।

१९—करु धांत=मन लगा ।

२०—पदमिनी=पद्मिनी स्त्रियों की चार जातियों में से एक है किन्तु यहाँ पद्मिनी शब्द में स्त्रीमात्र का बोध होता है । उद्ग=गाँव ।

२१—वेदन=वेदना, कष्ट ।

२३—सौकरी=तंग ।

२४—खाल=धोकनी ।

२८—सिरर=शिष्य ।

२९—लेहँहँ=भुंड ।

३०—ग्यह=धूल ।

३२—उपाधि=दुःख ।

३३—धनी=मालिक, ईश्वर । निवाजई=कृपा करेगा ।

३५—मैंदि रहना=डट जाना ।

३६—लंघना=भूखा ।

३८—लाल=प्यारा, ईश्वर । लाली देखन ... लाल=ब्रह्मवेत्ता ब्रह्म ही हो जाता है, यही इसका तात्पर्य है । उपनिषद् में भी "ब्रह्मविद् ब्रह्मैव भवति" कहा गया है ।

४०—मोटी=घटी । बिना जीव की मांस=धोकनी ।

४४—दीदार=दर्शन ।

४६—संचरै=प्रवेश करता है । मालै=कष्ट पहुँचाना है ।

४८—रोटी=निकामी । घाट=रास्ता ।

५१—पैट=हाट ।

५३—पला=पहा ।

६०—धनु=एक ऋषि, जिन्होंने ब्रह्मा, विष्णु और शिव के शील की परीक्षा ली थी । ब्रह्मा और शिव तो इस परीक्षा में उत्तीर्ण न हुए, पर विष्णु भगवान् ऋषि की आज्ञा का आचरण यह कर उलटे उनकी विनय करने लगे ।

६८—द्वराय=रेठला है ।

३९—जो मन पर असवार है=जिसने मनको बराने कर लिया है।

४०—परतद्ध=प्रत्यक्ष । राक्षस=भक्षिष ।

४६—सम्भिरत=सम्भृत । भाषा=हिंदी भाषा । सत=सत्य ।

४१—भोसपन लागे=पढ़ताने लगे, खीजने लगे ।

८२—प्रांतम=परमात्मा से तात्पर्य है । सूती=सो गई ।

८३—जूमता=लड़ता है । मंडा=उटा है । घमसान=घोर रूप ।
मूरमा=शूर । कायरी=कायरी की ।

८४—सधूरी=संतोष, धैर्य । सोंटा=डंडा । मगरुहो=धर्मद ।

४५—मानिक=यहां माणिक्य से परमात्मा का तात्पर्य है । अपन=अपना । धन=स्त्री । सचद=शब्द, नाम ।

८६—चाह=कामना । निरवासना=इच्छा-रहित । तत्त=तन्त्र, मन्त्र-ज्ञान । रत=अनुरक्त ।

७—स्मिर्गा=भृगोश्चपि यह महापि विभाडक के पुत्र थे । इन्होंने मालह वष की अवस्था तक किसी स्त्री का मुख तक नहीं दृष्टा था, किंतु महाराज रामपाद की भेजी हुई बेश्याओं ने इन्हें अपने रूप-लावण्य पर मोहित कर तपो भ्रष्ट कर दिया । पगामर=पराशर वेदव्यास के पिता, यह भी एक स्त्री पर मूढ होकर अपनी तपश्चर्या से हाथ धो बैठे थे । कनेरुका=यारिशा का एक मठ । साहित्य=मालिक, परमेश्वर । रगिनी=माया म आभप्राय है ।

३—बाल-भाषना

१—नवनीत=मरपत, गल्ल=बचल, तार=रुड । माधुरी=मिठास । बख हाग म ना-पय है । साचर=सुन्दर । एको=एक भी ।

- २—अरघराह=लटपटा कर । दुहँधा=दोनों ओर । घुटुगन=घुटनों के बल । महूर=गोप, नंद से तात्पर्य है ।
- ३—गुड़ियों=पैर । मुनक-मुनक=गहनों के घजने का शब्द किंवाप । मुखर=शब्दायमान । पिथरी=पीली । भीनी=रस-भरी, मीठी । चारो=छोटा बालक । गमिबिन्दु=काजल का दिठौना । असम नर=पंचवाण-धारी कामदेव । घरनि=घरी । मलहावति=खिलाना है । सुपर=चतुर । दंतुगियों=छोटे-छोटे दाँत ।
- ४—रैगै=चलै । ररै=रटे, धार धार काँट । जोइ-सोइ=जो मन में आवे वही । एदि अंतर=इतने बीच में । अंधवारि=आंधी ।
- ५—धौगै नपेइ रंग की गाय । हाइदि=बलभद्र को । च्यौतौ=व्याह दूंगी । सौइ=प्रथम ।
- ६—ओकि=अंजली । भलमलात=धमधमाता है, हिलता है । निपट=दितकुन । घरयो=गेबने पर भी । ही=मै । हीगण न घटौगो=भुलाया देने पर भा न भूलूंगा । हाप=रूप, गर्भ ।
- ७—गिभायो=तम किया । गिस=गुमरा । तातु=पिता । बलवार=बलराम । अयार=चुनलखोर, मध्यं दूबर की उबर लगाने वाला । भूत=भूत । सौ=रसौगद । ही=मै ।
- ८—हंसोवट=एक स्थान, जहाँ पर श्रीकृष्ण बट दूध के गोबे गड़े होकर दही बनाते थे । सौन परे=स पा होने पर । लीबा=सीबा, सिंधार । नेइ=बेट । समरिया=बचन का होना का दुबडा ।
- ९—बल=बलराम । अंतलि=करी बरतौ है । र्यै=रसौत । एदि एदि=हैतार धर धर । आगी=आँधी । कर्तित=नकारतौ है ।

- १०—बलैया=बलाय । खिभावत=तंग करने हैं । धिरयो=घमकी टों, डाँटा ।
- ११—डोटा=लड्डका । गाड़े करि=मजबूती से । साँटी=झड़ी । सुमेरु=देवता का पर्वत; यहाँ समस्त पर्वतों से अभिप्राय है । मारैगपानी=हाथ में धनुष धारण करनेवाले विष्णु भगवान; यहाँ श्रीकृष्ण से तात्पर्य है ।
- १२—भेवरा=लड्डू । चक=चकरी । आरे पर=साक पर । पोरों=डयोड़ी । जेरी=जेड़ी । मोरी=मोड़कर । तून डारति तोरी=दात से तिनका द्वाकर तोड़-तोड़ कर फँकती है, जिसमें कहीं नज़र न लग जाय ।
- १३—थारे=छोटे में बालक । तनिक तनिक=नन्हें नन्हें । चारन=चराने का । मभिक=मे ।
- १४—कनिया=गोड उड़ग । निझनिया=छातिस निष्कपट । कारन=लिये ।
- १५—बिगवन=चारों ओर चकर लगवान है पशुओं को इकट्ठा कराते है । मौद=मौगद । बडगड=बहला कर । अति=झोटा मा । रिगाड=पैदल चला कर ।

४— वृन्दावन-वर्णन

- १—चिडवन=चैतन्यना का समूह परम दिव्य तग=पहाड वीरव=पेड ।
- २—अविहङ्ग=बेराक टाक तिलमिनकर विभूति=ऐश्वर्य, प्रभा ।
- ३—सकुरण=शय भगवान ।
- ४—मारनन=रुमीनाथ विष्णु भगवान । बानिक=झटा, शोभा.

जगद्गमा=विश्वगमा, परब्रह्म । धारी=धारी । मंजुल=मन्त्र-
दुष्ठा । नङ्गाग=तालाप । विधु=चंद्रमा । मयूर=किरण ।

६—वाजिमंथ=अश्वमंथ यज्ञ । गुणनीत=निर्गुण । पुरंदर=ईश ।
परिचरजा=परिचर्या, सेवा, काम-काज । उमा=पार्वती ।
मगतम=मदा । सुभावदि श्राद्ध=चंचलता छोड़कर, निरचल
भाव में ।

७—अहनिमि=दिनगत । गौनीत=इन्द्रिय-ज्ञान से परे । पार=परे ।

८—गाहा=गाथा ।

९—मनहानि=मनह, मनंदन, मनातन श्री मनकुमार, यह
प्रथा के मानमो पुत्र कहे जाते हैं । जातरूप=सुवर्ण । निकर=
मसूद । अनीक=सेना । अमरावति=देवपुरी । त्रिद्रुम=सूगा ।
मरकत=नीलम । आयन=पौडे, बंद । फटिक=फटिक,
विद्यौर । पुरट=सुवर्ण । वस=दीर्घ ।

१०—सुश्रु=याननेशन । पागायन=परेशा, कपुतर । मारिहा=
सेना बीबा=मटक मोहाट=पौराहा ।

११—नय=दान । मानिक=म=८=मा=मग । उरट=बुद्ध ।

१२—१६ ४ १६ ।

१३—११६ ११६ ११६ ११६ ११६ ११६ ११६ ११६ ११६ ११६ ।

१४—मा-वैरागा तुद्रमहा तुद्रमा राविका-वावही ।

१५—म राविका-वैरागा अराविका-वैरागा । मय=ममनाक अनिमा-
दक अंगना । वैरागा माहमा आदि अरविद्वीप ।

६—महा-दहन

१—नयु क निरुद ११ ११६ । कनक माना वाम=
आहाग वाविका-वैरागा दहनान वरान है । मय वाविका ।
वमानु=दहन । मय=११६ ।

२—जाल=समूह । लीलिते कां=निगटने के लिये । वीथिका=मार्ग । भूरि=बहुत-से । धूमकेतु=पुच्छल तारे । उवारी=नंगी । सुरेसचाप=इंद्रधनुष । कलाप=समूह । सरि=नदी । जानुधान=राक्षस । प्रजारीहै=जलावेगा ।

३—बुबुक=हंकर । बुबुकारी=हुंकार, जोर जोर से रोना । निकेत=घर । भामिनी=स्त्री । छारा=छोकरा, वधा । महिप=भैंसा । वृषभ=बैल ।

४—नाद=शब्द । सविपाद=दुःख से । रावनों=रावण । मारनेड=सूर्य । वावनों=वामन, विष्णु का एक अवतार । आवनों=श्राना है । घामदेव=शिव । वादि=व्यर्थ ।

५—परानी जानि हैं=भारी जाती हैं । मंशेवै=मंशेदरी; रावण की स्त्री । मीजि=मल कर । वापुगे=बेचारा । घालिहै=नष्ट करेगा ।

६—हादन=जलता हुआ । केमरी-कुमार=केशरी वानर के पुत्र हनुमान तिली=एक तिल भाँ । अगार=घर । डाढ़ा=जल गया । टुनिचनु=काटते हैं, पा रहे हैं ।

७—धौत्र=दौट भूप । मीत्र=सामान । श्रीत्र=पडे में से उड़ल कर, रुमम में घबराकर । गादे=कष्ट में । गाल की यत्रावनों=गव हाकना । सावनों=सावन महीने की मृमलधार यथा ।

८—हाटक=माना लाय=गरमी चलन भाय=भाव, गति । पयमान=पवन वायु जिवाये=भोजन कराया । गय=यात्रा ।

९—विगत=प्रह्वानह । उपचार=इलाज । विमाह=जोक-गहिन । खान=चैन पामारा म कुल आराम । मनाह याहा मा २ नाय ४ हा । रमायना रमायन विष्णु श्री ज्ञाननवा-४

समोर-सूनु-पवन-पुत्र हनुमान । बुट-बुटो । मृगांशु-वैगण्ड
का एक रस विशेष ।

७—दोहावली

- १—परमारथ-मुक्ति । वारिद-मेघ ।
 ४—गाडर-भेड ।
 ५—पपीहारा-पपीहा, घातक ।
 ६—श्वानि मलिल-श्वानि नक्षत्र में बरसा हुआ जल, जिसे
 पपीहा पीता है ।
 ७—अमन भोजन ।
 ११—राम-सधि ।
 १२—गौर विचार, ध्यान ।
 १३—सुकून सुहृत्, पुण्य । कानु कोमल ।
 १४—मित्र १) शत्रु २) गर्व ।
 १५—दर्म श्यामो कालक की कालिम्ब । सुग मने पर ।
 १६—मैं हूँ मुहाया गिर पुण्यक मन्वस्यो हुआ ।
 १७—राम कर्म ।
 १८—तबाम एक कालक पर ही पाता बामनपर मूल जाना है ।
 १९—साधन मित्र कालक कालिम्ब पर । विभक्ति विशेष्य
 २०—कर्म पद्या अम
 २१—मौल अज्ञान
 २२—शत्रु मरु

८—श्लोक-सहित

- १—सैव २) अज्ञान कर्म ३) तद-विमान ज्ञानि-मुहम्मद
 साधन म न पन ३) अज्ञान-विद्य मेहा-वृत् । शरीर

४—सुवरनमई=स्वर्णमयी । पाय=पैर । गीत=गमन । बड़बौर=
बलरामजी के भाई श्रीकृष्ण ।

६—पगा=पगड़ी । अंगा=कुरता । उपानह=जूता । सामा=साज,
सामान । अभिराम=सुंदर ।

७—कलपद्रुम=स्वर्ग का एक वृक्ष, जो सब इच्छाओं को पूर्ण
कर देता है । खल्लेखो=गड़बड़ी, सोच विचार, चिंता ।
अंग=अंक ।

८—जेये=देने । इतै=यहाँ । परात=थाल । नैनन के जल सौ=
आंसुओं से ।

९—तंदुल=चावल । तिय=स्त्री । हुते=थं ।

११—कॉन्व=दगल ।

१२—जीरन=जीर्ण, पुराना ।

१३—गोव=द्विपा कर । यतीविधि सूच अन्धी तरह से । पोड=
पोटली । अछोट यकी । चामर चीवन । धाव=प्रेम ।

१४—इल कमक, गुल । हियग हृदय । यरहुरै कौपनों है । थोक
थोक भुण्ड के भुण्ड । हालो कप । चक्रिन में-चक्रव-
लियों में ।

१५—पावक एक पाव । सभा धान्य विशंप । कन पनि ।

१८—रकटि गरीय को ।

२५—विरवकर्मा देवताओं का शिष्या । णादे वैदल । अत्र=अत्रि ।

२८—जदुगाय यद्वों के राजा श्रीकृष्ण । भाय भाव ।

१०—रत्निमन-सुधा

—जांर वर में ।

४—गोम यधन गट्ट, नोक रहस्य । निरम नीरम ।

- ५—डार=डाल । पात=पत्ते ।
- ६—दर-दर=द्वार-द्वार । मधुकरी=जैसे भौरा एक-एक फूल से थोड़ा-थोड़ा रस लेता है, उसी प्रकार एक-एक घर से थोड़ी-थोड़ी भिक्षा माँगना ।
- ८—दाव=आग ।
- ९—कमला=लक्ष्मी । पुरातन पुरुष=सनातन ब्रह्म, विष्णु भगवान् ।
- १३—केर=केला । रस=आनंद, मौज ।
- १५—विषे=बोच में ।
- १६—सजाय=सजा ।
- १७—खून=हन्या ।
- १८—भृगु=एक ऋषि; पाठ २, छन्दः ६० की टिप्पणी देखो ।
- १९—वित्त=धन । अंबु=जल । हित=हितकारी ।
- २२—कूबरो=कूबड़ा, टेढ़ा-मेढ़ा । नखत=नक्षत्र, तारा ।
- २४—गाढ़ा दिन=कष्ट का समय ।
- २८—वमन करि=कै करके । स्वान=कुत्ता ।
- ३०—रसहिं=आनंद को । बंधु=मित्र, भाई ।
- ३२—पिक=कोयल ।
- ३५—मुनि-पतनी=गौतम ऋषि की स्त्री अहल्या ।
- ३६—नाद=संगीत का शब्द ।
- ४२—दही=जलाई, मेटो । भावी=होनहार ।
- ४४—मही=मट्टा, द्वाद्य । विलगाय=अलग हो जाता है । भीर=कष्ट, विपत्ति ।
- ४५—पैग=पैर । यमुधा=पृथिवी ।
- ४७—लाइये=लगानी चाहिए ।
- ४८—सहस्रौति=शान्तिसहित ।

- ४—दुःखान् दोः राजाश्यां का एषः ग्राध् द्वायन । एष-दुःख ।
 भावम्-अगायन ।
- ४५—अनि-भुनि, येद् । सुभृति भृतिः भर्मशास्त्र के ग्रन्थ ।
 निमत्-निर्मल ।
- ४६—षट्क-षडक । रज-भृज । राजस्य शासन । नेह- (१) प्रेम
 (२) तेल ।
- ४७—कुंग-गुग ।
- ४८—नागर-चतुर । व्याप-उजत ।
- ४९—ग्रदान-प्रीति-ग्रामेन । ग्राध पर-पितृपक्ष ।
- ५०—घायस-घौवा । यलि श्राद्ध का भोजन ।
- ५१—सगै-काम आता है । कौचं मन कपटी ।
- ५२—करिया-कंयट, मद्गाह । मोधि-खोज । पाहन-पत्थर ।
- ५३—भजन=(१) भजन करना (२) भागना । भज्यो=(१)
 भजन किया (२) भागा । तासों-परमेश्वर के नाम से ।
 जामों-संसारी विषयो में ।
- ५४—पतवारी=करिया ।
- ५५—दोरघ सांस=आह । साई=ईश्वर ।
- ५६—अनाफनी=अनमुनी करने की क्रिया । गुहारि=पुकारि ।
 वारक=एक वार । वारन=द्वार्थी ।
- ५७—अनि=स्वभाय ।
- ५८—घाय=हवा ।
- ५९—यलियै=यलिहारी ।
- ६०—अपना-अपना विरद्=अपना अपना वानाः जीव का पापों
 का कमाना और परमेश्वर का पापों का नाश करना ।

१७—सूँदी-यार्जन

- १—मोर पत्रा—मोर के पत्रों। लोल-भबट। माई हे समी
 दुनारी—(१) लारण्य, मुन्दरना (२) नमस्तेनपन।
- ३—निगम-वेद। आगम-शास्त्र। सुजान धनुर।
- ४—साद वाग्धर शरत् ऋतु के मेष। धीरहर ऊँचे महान
 धीर-धवल, साँदे। नील नवल, नथीन।
- ६—वेनु वासुडी। निनाद-शब्द। बीना धर बाँगा और
 वासुडी के मधुर स्वर से चंद्रमा के रथ में जुने हुए मृग
 माथ होकर टडर जाते हैं। फिर चंद्रमा जैसे आगे बढ़े
 दक्षिण पति और पत्नी। अमर आनन्द, शिखास।
- ७—वही विनु ऋतु इ दे—वसन्त पाश्चम रथा, शरत्,
 शिशिर, और हेमन्त। लजना म्।
- ८—सम्कत नीरम। अवाल मंगा, विरम। नकुल म्णा मता।
 हार हारा। अरुणत शुभ। नरकमि रजाम क उरीरम
 रम्।
- ९—मानग हाथी। नरक हनक राना। अरुणत गति म
 अत्यन्त नाथर हा
- १०—रुम पद। कल स्रुत, मधुर।
- ११—दृष्टय कम। काल परमो रम्। अरुणत मीरु मन्-
 तिन वन। र्ग गुण।
- १२—चानक पर्याया। कीरु चकरा
- १३—अजयवट समाय जित्वा दे कि २। १५ समय एक समान
 नुस्वी वटवृत्त दिव्याइ र्ना है। उमरु। कपले पर नारायण
 शिरारूप धारण कर लयन है और समान म् ७ रा अयन

५—मिथ्य=शिक्षा, उपदेश । भेषज=दवा ।

६—आसी=दर्पण ।

७—ओझा=नीच । छीलर=द्विधला, जिसमें थोड़ा ही भरा हो ।

११—पिसुन=कपट्टी । दाभ्या=जला हुआ । द्वाँधि=मट्टा ।

१२—शिरषा=पेड़ ।

१४—रसरी=ररसी । सिल=शिला, पत्थर ।

१५—विलम=विलम्ब, देर ।

१७—अधोध=मूर्ख ।

२०—उदधि=समुद्र । तोय=पानी ।

२१—ओक=अंक, यात ।

२२—सरसुति=सरस्वती ।

२५—गारि=गाली ।

२६—अव=आम । नियौरी=नीम का फल ।

२८—नौर=जगह ।

२९—नौर=वैर । विपे=धीच में ।

३१—परचै=परिचय, पहिचान । भाय=भाव ।

३२—गाथ गाथा, कथा ।

३३—निदान परिणाम, कारण । भान=भानु मर्त्य ।

३५—विभौ=विभव, तेश्वर्य । उच्छुक=उल्ल ।

४१—यमाय वरा ।

४२—मांटी=थड़ी, गर्भार । पात्र=वरनत ।

४५—रमन रमना, जीभ । कद्दप=कम्दप कलुवा ।

४९—लोक=लोग । पय=दूध । पयोधर=भवन ।

२१—मिथ्यान्म-मार

- १—द्विनभंगु=द्वयभंगुर, नाशवान । नागर=चतुर, रसिक ।
- २—कल्पना=मिथ्या विचार । फलद=लड़ाई-भगड़ा । नियारनो गेफना चाहिए । प्रपंच-घटमार=झूठी बातों की पाठशाला ।
- ३—शूप=कुँवा ।
- ४—जगसर्ग=मलक रक्षा है ।
- ५—दुम=पेड़ । दंपति=पति-पत्नी; श्रीकृष्ण और राधा में नापत्य है ।
- ६—कोरति=कोर्ति, श्रीराधिकाजी की माता । वृषभानु=श्री राधिकाजी के पिता ।
- ७०—सौवरो=श्याम, श्रीकृष्ण । मनभावरो=मनोवांछित । रसा-इये=पागला चाहिए ।
- ७१—'नागरिया'=नागरीदास ।

२२—गिरधर की कुंडलियाँ

- १—अपावन=अपवित्र, अशुभ । गाहक=ग्राहक, खरोदनेवाला, कद्र करनेवाला ।
- २—अपंग=लूला-लंगड़ा, अंगहीन । सौह=शपथ । परिहरिय=छोड़ दे ।
- ३—त्रास=भय । लंकम=रावण । वाज्यो=कहलाया, प्रसिद्ध हुआ ।
- ४—नारा=नाला । नारै=नाड़े, मारें ।
- ५—परस्वारथ=परार्थ, परोपकार । सीस.....दीजै=प्राणों का नोह छोड़ देना चाहिए, प्राण-पण से रक्षा करना चाहिए । पानी=मर्दाना, इन्द्रव श्रावण ।
- ६—आद्यतहि=गहत हुए ही । घाज=एक शिकारी चिड़िया ।

तेज से भस्मीभूत अग्नि साठहजार पूर्वजों का उद्धार करने के लिए, पृथिवी पर गंगा को लाये थे। बिल्लानी=व्याकुल, तीन-तेरह।

७—गात=शरीर। उराहना=उपालम्भ। मीच=मीत। आप=जल। कालकूट=समुद्र में से निकला हुआ विष, जिसे शिवजी पी गये थे। अटहर=ढेर, सँज। तात्पर्य यह कि गंगा-जल-पान करते ही जीव शिवरूप हो जाता है।

८—जन्हु=एक ऋषि, जिनके नाम से गंगा का 'जान्हवी' नाम पड़ा है। आछी=अच्छी, उत्तम। धनेस=कुवेर। मौलि=शिर।

९—निगम-निदान=वेद का रहस्य। हाँ=हृदय। तच्छन=उसी समय, तुरंत। प्रतच्छन=प्रत्यक्ष। अच्छ=अँख। इंदिरा=लक्ष्मी। धीधे=विधे हुए, वँधे हुए, उलम्के हुए। भव=संसार। गुर्विद=गोविंद, भगवान्।

१०—असम=जो बराबर न हो; यहां तीन से अभिप्राय है। लाइ=लगाकर। कूट=शिखर। भंगै=भंग के। पूछतो=इञ्जत करता।

११—भामी=धोखेवाज, धूर्त। अवाइन के=आगतों के, आने के। सोर=शोर। वाट हेरै=प्रतीक्षा करते हैं। नाँदिया=नंदा; शिवजी का वाहन।

१२—रस=आनंद। रौरव=एक नरक। विथा=व्यथा, कष्ट। सुरी=गुरीवी। साहिवी=अमीरी।

२४—अन्योक्तियाँ

१—प्रसून=फूल। सिख=शिक्षा, उपदेश। काँटि=कराँड़। बहोरि=फिर। बहारि दिन=वसंत ऋतु। सारंग=भौरा।

- २—सेमर=शात्मलि । माघवी=लता विशेष । पूरी=पूरी की । सुर-सरि-वारि=गंगा-जल । विहाय=छोड़कर । पट्टपट्ट=भौरा । पसुते-इयोड़ पद=जातवर से इयोड़े अर्थान् छः पैर !
- ३—सालमछो=शात्मलि, मैमर । गोधे=लल चाये । अमिप=मांस । अली=भौरा । अनुकूले=अनुरक्त हुए । मुक=शुक, तोता ।
- ४—रद=दौत । केहरा=तिह । जरा=बुढ़ापा । जंमुक=मियार । गाजै=गरज रहे हैं । लूँषरी=लोमड़ी । ससक=खरहा । मुतंत्र=स्वतंत्र । पंगु=लैगडा ।
- ५—घाट=रास्ता ।
- ६—उनै=बहो; परलोक । इन=यहो; मभार । तरनी=नौका । पथी=पथिक ।
- ७—जरजरी=पुरानी, टूटी-फूटी । मवर=चक्र, आवर्त । पाहि=रक्षा करो ।
- ८—सुखमा-शोभा । ज्ञानि=उबलना । पडव पना । दुति-शोभा । अलि=भौरा । मारक=मार डालनेवाली । विस=विष ।
- ९—पाती=धित्री । गे=गये । भासै=मान्द्रम होता है । तम=अंधेरा । मवासो=घर । चर=चल, अति-य ।
- १०—मुगती=मुक्ति । चेत=चना व, प्रखलित करदे । सिधि=मिद्धि । लाव=लगाआ । भेष=कन्याग ।
- ११—बावरी=पगली, भोला-भाली । वाम=भौ । नैहर मायका । वन=पति, परमात्मा से आशय है । नत=तत्र, मनमाना काम । नाह=नाथ, पति । चै=कर । नूमि=अलकृत होकर, गहन पहन कर । अनुकूलै=अंम कर ।

- ७—प्रतप्त=प्रसक्त । लुप्त=खिपने हैं । अविफल=ज्यों का त्यों, पूर्ण । कानिदी=यमुना । जिनी=जितनी । रजत=चोरी, श्वेत । उच्छ्वरत=उद्वलता है । निसिपनि-चंद्रमा ।
- ८—कूजत=बोलाते हैं । कल=सुंदर । पारावन=परेवा । कारंडव=सारस । जल-कुडुट=पत्नी विशेष । चक्रवाक=चकवा । बक=बगुला । पिक=कौयल । रोर=शोर ।
- ९—बालुका=बालू । बगराये=फैलाये, दितगाये । मुक्त=मुक्ता, मोती । चिकुर=बाल ।

(२) अक्षर

- १—उदर=पेट । परसन=घृता है । लाला=राल । तुचा=चमड़ा ।
- २—कपाल-क्रिया=हिन्दू धर्म के अनुसार एक मृतक-संस्कार । जो मृतक की अन्त्येष्टि क्रिया करता है, वह उसके शिर में एक लाठी से छेद कर देता है । कहते हैं, इस से मृतक की जीवात्मा ऊर्ध्वगामिनी हो जाती है, अर्थात् वह मुक्त हो जाता है । भोज=भोजन । सुभग=सुन्दर । कुरु=एक महा प्रतापी राजा, जिसकी मंत्रान कौरव के नाम से प्रसिद्ध है । दधीचि=एक परमस्थायी ऋषि, जिन्होंने इंद्र को वृत्रासुर-वध के लिए, वसु यन्त्रों के अर्थ अपनी अस्थियां जीवित अवस्था में ही दे दी थीं ।
- ३—उचाटन मंत्र=उचाटन मंत्र, इस मंत्र के प्रयोग से जिसपर इसका प्रयोग किया जाता है उसका किसी विरोध व्यक्ति वा स्थान से चित्त उचट जाता है । सोपरी=सोपड़ी । कापाटिक-वाममार्ग के अनुसार एक साधक, जो नर-कपाल टिक इहना है ।

४-धूम बिना की=निर्धूम, धधकती हुई। बिहंगम-पक्षी। लोग-
 लुगार्द-पुरुष और स्त्री। निसाकर=चंद्रमा। लहू=रुधिर।
 मसान=ममसान।

५-ररत-रट रहे हैं, शब्द करते हैं, रोते हैं। रव-शब्द। हृद-
 गिहः-पक्षी-विशेष। भयद्-भयंकर। दव-आग। तुमुल=
 दन्ड, पना, अत्यधिक।

(३) प्रेम-प्रणय

१-सुरत-याद। लेहू उथारी=बचालो, उद्धार करदो।
 २-नियाव=न्याय, ईसाफ। निशेरशो=निर्णय किया। अंतर-
 जामी=अंतयोमी, हृदय में घसनेवाले।
 ३-एल्फत-दिल्ली हुई। गान है गगनो-गुह संजु धार कर
 रगो। किंकिनी=करभनी। पियरोपट=पीतांबर। परिकर=
 पेंटा। यनयारी=यनमाली, श्रीकृष्ण। हानो तारी संसार-
 सागर में पार कर दिया, गुल कर दिया। जुगधो-देरो।
 नोक=अच्छी तरह, ध्यानपूर्वक।

४-अमि=तलवार। प्रवांधी=समनाथो। पतियावै विश्वास
 करे। इनाहन=एक प्रकार का कदवा पाठ। पशो=केला।
 अज पुरे=गोपिया उद्भव में बहती है कि अपने ज्ञान
 र्प्यो अज्ञ में हमारे प्रेमरूप दन को तुम जिनना ही
 बातेने उतना ही वह लहलहा होना जायना।

५-पतित-अधारी पापियों का निम्नतर करनेवाले, हो या,
 वीरभूषण पक्ष मणि जिते जिते भगवान् धरणा करने हैं।
 गुणो=दुःखी। परीक्षण=परीक्षा, होती करीब का कर

६-अपराधी=अपराधी, पापी। हारी=अच्छे करों-
 का ग हारी। शरीर=शरीर, तबल। अज्ञान=अज्ञान

पर का पही, जो इधर-उधर उड़ कर अरु में फिर जहाय पर ही आ जाता है; जिसे अनन्य रीति से एक का ही आशय है। पगये=दूमरे। वादिहि=व्यर्थही।

८—मरग=स्वर्ग। हेम=मोना। बेरी=बेड़ी। परमारथ=मोक्ष मार्ग। स्वारथ=व्यवहार। फेरी=अंतर। आयुम=आयु। तार=प्रखलित।

९—अविचल=अटल, निरंतर। दहते=जला देते।

२८—प्रतापनारायण मिश्र की कुछ कविगाँठें

(१) प्रतापजी काथना

१—प्रतिपात्त पात्तन-पापण।। वधा-व्यथा, कष्ट। निदान प्रता-गे विन्कृत अताडी, निपट मूरु। कीरति होति, उर। मुधा अमृत। समये शक्तिवाला पकज कमल। बलिगरी न्यौझावर

२—अवार आधार, अवलम्ब। अतिमै अतिशय, बहुत आधिक। बेरते=काट काट गे। निकेतन=स्थान।

(२) दुहाया

—तकन्याय गवन नाका दम आगवा, हेरान हा गय चान= काव चटक पकाशवान। मद्रिम=मद। गवन=लग। निगवम्य विन्कृत, मय। लच्छन चलग। अकिल अरु।

३—शाने किर्मा। विगवा समय। मडुइ मुडही। दौय शर।

४—राकनी एकम पापलान व्यामला हो गया। पारिक नै= एक गय मकड हो गय। गीरी कमर भी। रामवन=राव।

४—वृत्ते=बलपर, सहारे से । डोलिन-डालित हैं=चलते-फिरते हैं ।
खरारत फिरत रहन=पैठते फिरते थे । गेन्गन का=गेसाँका ।
हन=हैं ।

-(३) कुडका वद

१—मनुर्वो=मन । धृतत=ठगता है । गाहरावन=पुकारता है ।
साहव=मालिक. ईश्वर । घट-घट=शगीर-शरीर, हृदय-हृदय ।
हियो=यहाँ । सयाना=चतुर ।

२—ठोरी=स्थान । गोरी=स्त्री । भोरी=भोली, झूठी । तोरी=तेरी ।

२७—रंक-रोदन

१—मृत्युपर्यन्त=मौत तक । अनुभूत=अनुभव किया हुआ,
भोगा हुआ । कपूर न होगा=कारूर न हांगा. उड़ न जायगा,
नाश न होगा ।

३—वर्ण-उपाधि=अक्षरों का मिलाव—जैसे के. सी, एम, आई,
डी, लिट् आदि ।

५—घोष घाप की पाग=पिता की सारी जिम्मेदारी अपने ऊपर
लेकर, पिता का स्थानापन्न होकर । कुनधा=कुटुम्ब । निरं-
कुश=स्वतंत्र ।

६—कोश=रखाना । मंथित=जमा किया हुआ । परिणाम=
नतीजा ।

८—आराम=शांति ।

९—इनसालबेटे= (अंगरेजी) दिवालिया । विभूति=पेश्वर्य,
धन दौलत ।

१०—दुर्वाह=पुरे बचन, निंदा ।

११—विश्र=पंडित, विद्वान् । धर्म-धुरंधर=धर्म का शोक उठाने
वाले, परम धार्मिक ।

- १६—विरद=यश । रस=आनंद, मंगल ।
- १७—पौरुष=पुरुषार्थ । विपाद=शोक ।
- १८—हाम=अवनति । अद्म्य=जिमका दमन न किया जा सके जो दूर न हो सके ।
- १९—गोरस=दूध-दही । पिसान=चून, आटा ।
- २०—चोखा=बढ़िया । अड़ जाने हैं=मचल जाते हैं । मनबानी=मनबाही । काढ़ कनेजे=दुःख में हृदयके टुकड़े-टुकड़े करके ।
- २१—कूल-कूचकर=प्रमल हो होकर । व्यंजन-भोजन की चीजें । पानेवाले=गानेवाले, गाने के अर्थ में 'पाने' का प्रयोग माधुष्य में—विशेष कर बंधुओं में—पाया जाता है ।
- २२—टका-दो पैसा, बगना में टका' में रुपये का बोध होता है । ज्ञायमों' न भी टका में रुपये का बोध कराया है ।
- २३—दाढ़ मट्टा । मंठी मट्ट में चावल पका कर महरो बनाया जाता है । इसका प्रचलन प्रज और बेंदेलगड में अधिक है ।
- २४—गड गडी का पड । बटगड बडा के टुकड ।
- २५—पनियाहार प्रनाकार दूर करने का उपाय ।
- २६—कडारे मिट । नाद शब्द । बडाहक मय । अस्थिर चचक । विगम विवती ।
- २७—पनियाहार प्रनाकार ।
- २८—मट्ट भयातक ।
- २९—अरजित गडका मट्ट मय । इट विव । परि-
पट्ट ममान ।
- ३०—बसाहार रुपड और भावन ।
- ३१—नगनी समार गड गराव ।

1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100.

- ५—इंद्रचाप=इन्द्रधनुष । बलाकावली=बगुनों की पंक्ति । हमी-शोभित । पावसी=वर्षाके ।
- ६—पीयूष-अमृत । भूरि=बहुत ।
- ७—संभ=संभ, आधार । कलाप्र=स्यौं । समाधर=छम्भीरधम ।
- ८—ओजशिवनी=तेजशिवनी । धंगावली=भौंगों की पंक्ति । अरु-रक्त-अनुरागी, भक्त ।
- ९—त्रिगुण रंग मन्ध. रज और तम का कमरा श्वेत, लाल और काला रंग यहाँ गंगा, सरयुनी और यमुना से तात्पर्य है ।
- १०—वान=इश। स्वगनाथ गरुड ।
- ११—यजन पूजन । गूढ़ अत्यन्त गुप्त ।

३५—शक्ति-प्रहार

- १—वसु इडा कपिल हा वसु इर गया इन्द्रजित्त-मेघनाद ।
भौमिप्र-नदमण गति (१) अस्वशिरस (२)
गजग ।
- २—वसु इल १९ इ का ममनाप २२ इर-गयग । इन्द्रजि-
नदमण कथि क र
- ३—इरु इ वसु इल वन हापव इलवव वहाग, मृच्छिप ।
म-कन अरु गग कयरावत इव गुमि अग । अनुरागी
आजगवहा
- ४—इन्द्रजित्त १९ इ . ३ इकन इव व कालवाय महाशक्ति ।
अपराध अरु हावक र
- ५—हा इन्द्रजित्त १९ इ कय ममद
- ६—इरु इल

१—शोर=दूध । गिर-वसिष्ठिन शोर-निल गिरा पृथा जय;
निलोदक से पिनमें का तपेण किया जाता है ।

२—अनिसक्रिया=मृगक-अंशकार । गिर=जटाशु से तापयं है ।

३—अकिंचन शिवके पास शूद्र भी न हो, पद्मार्द्र गुरीय ।

४—शेष=शार्द्रा, अन्य ।

५—जनक=उपनिबर्त्ता । अन्वर्थ=अनिष्ट, दुर्गह । विमल
रटाह ।

६—स्वर=म्यगं ।

७—धार=धार, भस्म ।

८—मंजावनी=चाह शूद्रों जितके संघन से मुतप्राय भी जो
बठता है । कृष...जायगा=आप चल धर्मगे ।

९—वायु का पुत्र हनुमान । वंद्य=वंदनीय ।

३५.—व्रजभावा

१—भुवन-विदिन=लोक-प्रसिद्ध । भुवि=भूमि । रस पूर्ण=आनंद-
मय । विभुराई=पैलाई । मंजु=सुन्दर । सुषराई=चतुराई ।

२—काम-अभिराम=इन्द्राणै पूरी करनेवाले । सहृदय मनि=
सरस बुद्धिवाले ।

३—अरविंद=कमल । मकरंद=पराग । मलिंद=भौरा । विरमत=
रमते हैं ।

४—कलिदिनि=यमुना । जीवन=जल ।

५—कलिसलहर=कलि के पापों को नाश करनेवाला । मजु=
सुन्दर । मुचि=गुचि, पवित्र ।

६—कूल=किनारा । कुमुमित=फूले हुए । ओक=स्थान । निकंदन=
नाशकर्ता । मुकुलित=प्रफुल्लित ।

- १—भीम=भीड़ ।
 ५—हिंसाय गया=ग्यो गया । टकलाय=टक लगाकर । नै=नम्र ।
 दीष्टि=दृष्टि ।
 ६—भव-विभव=सांसारिक ऐश्वर्य । विभूति=ईश्वरता । सहसि=
 दबकर, डर कर ।
 ७—कथा=कथनों, गुड़ड़ी ।
 ८—दाय=स्वत्व । संकेत=इशारा । आदेश=आज्ञा ।
 ९—परिधान=वस्त्र । सैनिक=सिपाही ।
 १०—विहाय=छोड़कर ।
 ११—वास=वस्त्र । कपाय=गोस्त्रा, संन्यासियों का वस्त्र ।
 १३—मर्त्य=मरनेवाले, अनित्य । धर्म=कवच । कतहुँ=कहीं ।
 श्रेष्ठतर=बहुत ही श्रेष्ठ । तथागत=बुद्ध । नन=मुका हुआ ।
 निधि=संपत्ति ।
 १४—चकराय=चकित हो कर । मंगुटित=भरे हुए हैं, व्याप्त हैं ।
 १५—अष्टांग मार्ग=बौद्ध धर्म के अनुसार सम्यक् दृष्टि, सम्यक्
 व्यायाम, सम्यक् संयम आदि आठ साधन, जिन्हें साधने
 से जीव 'बुद्ध' हो जाता है । बुभ्ताय=समंता कर । रंक=
 गरीब । नाच-शुद्ध । मोपान=सीढ़ी ।
 १६—जरठ-बूढ़ा । भवचक्र=संसार का, जन्म-मरण का चक्र ।
 निर्वाण-मोक्ष । प्रामाद-महल । पीयूष=अमृत ।
 १७—यशोभरा=गौतम बुद्ध की स्त्री । आभा=कांति ।

३७—पार्थ-प्रतिज्ञा

- १—करतल=हथेली । युगल=दोनों ।
 २—घालरवि=प्रातःकालीन सूर्य । बोधित हुआ=मालूम हुआ ।

३--अरुणिमा=अली । अनरु=आग ।

४--नामापुट=ननुये, नधुने । भूरि=बहुत । भायज=भयकर ।
घोष=शब्द । फण=फल । कणि=मांस ।

५--परिण हृत्-यिम गये । विरुहित=कड़कने हृत् । पद्य=कमल ।

६--उत्पाप=जलन । अरिदम=शत्रुघो का मारनेवाले । क्रमा=
क्रोध । यद्यत्था=विजयी । जलदु=मेघ ।

७--पार्थ=पृथा के पुत्र अर्जुन । मत्स्य=शीत ।

—निधन=पथ । उम्मुक्त=मुन्दा हुआ । गौरव=एक महा भयकर
तरक ।

८--गण नक्ष वाण का निशाना ।

—किञ्चर=देव-यानि विशेष । न नृतिन कलरव=गोठन कपूर ।

—उपवृत्त=टीका यद्यत् ।

अभ्युत=अपणु भगवान् धारणा पुत्रयमानि=मांस ।

९--वया-विभार आयु की माया दूतल=दूरपरित्र, दूट
रामा-रानी

--'वगज=माय 'वविज-वन वादव-मसुट की आग । म्दाम
का क'उ

... १५३ - १५४ १५५



한글서체

한글서체는 한글을 컴퓨터로 처리할 수 있도록 만든 글꼴이다. 이는 한글의 모양과 크기를 지정하여 출력할 수 있도록 하는 역할을 한다. 한글서체는 크게 명조체, 굴림체, 고딕체, 돋움체 등으로 나뉘며, 각각의 특성에 따라 다양한 용도로 사용된다. 예를 들어, 명조체는 가독성이 뛰어나서 문서나 출판물에 많이 사용되며, 굴림체는 화면에서 잘 보이도록 설계되어서 웹 페이지나 소프트웨어 인터페이스에 자주 사용된다. 또한, 고딕체는 현대적이고 깔끔한 느낌을 주며, 돋움체는 전통적인 아름다움을 추구하는 디자인에 적합하다. 이처럼 한글서체는 디지털 환경에서 한글을 효과적으로 표현하는 데 필수적인 요소로 자리잡고 있다.

- 1. 명조체: 가독성이 뛰어나서 문서나 출판물에 많이 사용된다.
- 2. 굴림체: 화면에서 잘 보이도록 설계되어서 웹 페이지나 소프트웨어 인터페이스에 자주 사용된다.
- 3. 고딕체: 현대적이고 깔끔한 느낌을 주며, 다양한 디자인에 적합하다.
- 4. 돋움체: 전통적인 아름다움을 추구하는 디자인에 적합하다.
- 5. 바탕체: 화면에서 잘 보이도록 설계되어서 웹 페이지나 소프트웨어 인터페이스에 자주 사용된다.
- 6. 맑은고딕: 현대적이고 깔끔한 느낌을 주며, 다양한 디자인에 적합하다.
- 7. 나눔고딕: 현대적이고 깔끔한 느낌을 주며, 다양한 디자인에 적합하다.
- 8. 굴림고딕: 화면에서 잘 보이도록 설계되어서 웹 페이지나 소프트웨어 인터페이스에 자주 사용된다.
- 9. 고딕고딕: 현대적이고 깔끔한 느낌을 주며, 다양한 디자인에 적합하다.
- 10. 돋움고딕: 전통적인 아름다움을 추구하는 디자인에 적합하다.



Mathematical Proof

Let x and y be real numbers. We will show that $x^2 + y^2 \geq 2xy$. Consider the expression $x^2 + y^2 - 2xy$. This can be rewritten as $(x - y)^2$. Since the square of any real number is non-negative, we have $(x - y)^2 \geq 0$. Therefore, $x^2 + y^2 - 2xy \geq 0$, which implies $x^2 + y^2 \geq 2xy$. This completes the proof.

Next, we will prove that the sum of the squares of two numbers is equal to the square of their sum minus twice their product. Let x and y be real numbers. We have $(x + y)^2 = x^2 + 2xy + y^2$. Rearranging this equation, we get $x^2 + y^2 = (x + y)^2 - 2xy$. This shows that the sum of the squares of two numbers is equal to the square of their sum minus twice their product. This completes the proof.

Q.E.D.

End of Document

रसखानि—यह दिल्ली के पठान थे। शाही खानदान में इनका जन्म हुआ। पहले इनका नाम इबराहीम था। स्मरण रहे, यह बिहानीवाले इबराहीम नहीं थे। इनका जन्म अनुमानतः सन् १६१५ के लगभग हुआ। युवावस्था में यह किसी बनिये के लड़के पर बड़े ही आराक्त थे। पीछे, यह प्रेम श्रीकृष्ण की ओर फलट गया। यह गुमाई विठ्ठलनाथजी के कृपापात्र शिष्य थे। २८४ वैष्णवों की बातोंमें इनकी भी बातों हैं। रसखानिजी परम प्रेमी और वैष्णव थे। इन्होंने ब्रजभाषा में बड़ी ही सफलता के साथ कविता की है। इनकी भाषा में शब्दाडम्बर बहुत ही कम है। प्रेम का तो इन्होंने पेमा चित्र रचा है कि देखने ही बनता है। 'सुजान रमरान' और 'प्रेम-याटिका' नामक इनके दो ग्रन्थ 'मनते हैं। अनुमान में इनका देहान्त सन् १६८५ के लगभग हुआ।

मनापति—मनापति का जन्म सन् १६४५ के लगभग हुआ। यह अनुपमगर निवा वृन्धशहर, के निवासी थे। 'पता हा नाम गगाधर और पितामह का परशुराम था। हारानणि शक्ति नामक काट मज्जन इनके गुरु थे। इनका पश्चिम मनापति न स्वयं अपने एक कविता में दिया है। पहले यह बड़े ही शृंगारी कवि थे। बाद में गुरु-मनस हो गये। शृंगार और शान्त दोनों का रसा में इन्होंने रुचान किया है। यह सधमुच हा महाकवि हैं। इनका रचन चतुर्दश सौ वर्षों की नहीं है। इनके दिग्दर्शक कविता बड़े ही सुन्दर हैं। इनका 'मिर, कविता-व्याकरण' नामक ग्रन्थ मिलना है, जो अब अस्मात्गत हो है। इनका मृत्युकाळ

में विरले ही मिलेंगे। आप का जीवन, घाम्त्व में, मृत्यु और धन्य है।

जगन्नाथदास 'रत्नाकर'—रत्नाकरजी का जन्म काशी पुरी में, संवत् १९२३ में, हुआ। यह अमवाल वैश्य और राधारमणी वैष्णव हैं। इन के पिता का नाम बाबू पुरुषोत्तमदास था। इन १८९२ में आपने बी० ए० की परीक्षा पास की। सन् १९०२ में यह स्व० अयोध्या-नरेश के प्राइवेट सेक्रेटरी के पद पर नियुक्त हुए। पीछे श्रीमहारानी साहवा ने इन्हें अपना प्राइवेट सेक्रेटरी बना लिया। अब भी आप एक प्रकार से उसी पद पर हैं। कर्मों के आप अच्छे ज्ञाता हैं। कविता ब्रजभाषा में करते हैं। आप का साहित्यिक ज्ञान बहुत बढ़ा-चढ़ा है। कविता मर्म और भावमयी होती है।

राय देवीप्रसाद 'पूण'—रायसाहब भद्रम्, जिला-कानपुर, के रहनवाले थे। जबलपुर में इन्होंने शिक्षा पाई थी। आप बी० ए०, बी० एल० थे। कानपुर में वकालत करते थे। थोड़े ही दिनों में नामी वकील हो गये। नगर भर के लोग इन्हें चाहते थे, क्योंकि बड़े ही मिलनसार, परोपकारी और सन्धे थे। रायसाहब सार्वजनिक कार्यों में सदा भाग लिया करते थे। आप धियासाफिस्ट थे। सनातनधर्म पर बड़ी श्रद्धा थी। हिंदा पर इनका विशेष रूप में प्रेम था। बागवत-वाचन और चद्रकला भानुकुमार नाटक पूणजी की उत्तम रचनाओं में हैं। आपकी कविता बड़ी चुटानी होती थी। कविता अधिकतर यह ब्रजभाषा में करते थे। इनका साहित्यिक ज्ञान प्रामाणिक माना जाता था। इस युग के हिंदी-कवियों में पूणजी का स्थान, वास्तव में, उंचा है।

